

# जीवन परिचय

सद्गुरु

महात्मा मंगत राम जी

महाराज

संगत समतावाद



## सत्पुरुष श्री मंगतराम जी महाराज

- जन्म : नवम्बर 24, सन् 1903 ईस्वी  
महासमाधि : फरवरी 4, सन 1954 ईस्वी (अमृतसर)  
जन्म स्थान : गंगोठियां ब्राह्मणां, तहसील कहुटा  
ज़िला - रावलपिण्डी, (पाकिस्तान)

# जीवन परिचय

सद्गुरु

महात्मा मंगत राम जी

महाराज

संगत समतावाद

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण - 1989 - 1000 प्रतियाँ

द्वितीय संस्करण - 1997 - 1100 प्रतियाँ

तृतीय संस्करण - 2007 - 1100 प्रतियाँ

प्रकाशक :

समता योग आश्रम

छछरौली रोड

जगाधरी-135003

प्राप्ति स्थान :

संगत समतावाद दिल्ली (रजि0)

समता योग आश्रम

अंसल पालम विहार फार्म नं०45

गाँव-सलाहपुर

हूडा गुड़गाँव सेक्टर-21 के सामने

नई दिल्ली-110061

फोन नं०: 28061518, 28061519

मुद्रक :

राजेश प्रिंटिंग प्रैस

7321-7322, आराम नगर,

पहाड़ गंज, नई दिल्ली-110055

## महामन्त्र

ओ३म् ब्रह्म सत्यं निरंकार अजन्मा  
अद्वैत पुरखा सर्वव्यापक  
कल्याणमूरत परमेश्वराय नमस्तं

### शब्दार्थ

- |                   |   |                              |
|-------------------|---|------------------------------|
| 1. ओ३म्           | - | सर्व रूप ओंकार               |
| 2. ब्रह्म         | - | अनन्त शक्ति परम तत्व         |
| 3. सत्यं          | - | सदा एक रस                    |
| 4. निरंकार        | - | आकार से रहित                 |
| 5. अजन्मा         | - | जन्म से रहित                 |
| 6. अद्वैत         | - | केवल रूप                     |
| 7. पुरखा          | - | परम चेतन सत्ता               |
| 8.9. सर्वव्यापक   | - | सब में व्याप्त               |
| 10.11. कल्याणमूरत | - | परमानन्द स्वरूप और सरोत      |
| 12. परमेश्वराय    | - | ऐसे परम ईश्वर, बड़े मालिक को |
| 13. नमस्तं        | - | नमस्कार हो!                  |

त्रयोदस अक्षर मंत्र यह, सर्वसिद्धि दातार।  
जो सिमरे नित प्रेम से, मंगल पाए अपार।।

जन्म-जन्म जाये भरमना, प्रभ चरन पाये विश्वास।  
मोह माया संकट मिटे, सब कारज होवें रास।।

महिमा सत् स्वरूप की, सब अक्षर पहचान।  
चार वेद और स्मृति, सब का सार निद्धान।।

(ग्रंथ 'श्री समता प्रकाश' से)

## मंगलाचरण

नारायण पद बंदिये, ताप तपन होये दूर।  
नमो नमो नित चरण को, जो सरब आधार हज़ूर॥

हिरदे सिमरो नाम को, नित चरणी करो दण्डौत।  
सत् शरधा से पूजिये, रख सत्गुर की ओट॥

दुबिधा मिटे मंगल होये, जो चरण कंवल चित्त धार।  
रिद्ध सिद्ध आवे घर माहीं, पावें जय-जयकार॥

साचा ठाकुर सरब समराथा, अपरम शक्ति अपार।  
“मंगत” कीजे बन्दना, नित चरणी बलिहार॥

सत् मारग सोझी मिली, तन मन भया निहाल।  
गवण मिटी संसार की, सतगुर मिले दयाल॥

बार-बार करूं बन्दना, सतगुर चरणी माहीं।  
“मंगत” सतगुर भेंट से, फेर गरभ नहीं आई॥

बार-बार करूं बन्दना, सतगुर चरणी माहीं।  
“मंगत” सतगुर भेंट से, फेर गरभ नहीं आई॥

# प्रस्तावना

यह संक्षिप्त कथा वर्तमान युग के एक महान् सन्त सद्गुरु मंगत राम जी की है। इनका जन्म सन् 1903 में गंगोठियाँ ब्राह्मणाँ नामक गांव, ज़िला रावलपिण्डी में हुआ। आप बाल्यकाल से ही सादगी, विनम्रता और कुशाग्र बुद्धि, संयम एवं भक्ति की प्रतिमूर्ति थे। तेरह वर्ष की स्वल्पायु में ही आत्म साक्षात्कार हुआ। इसके पश्चात् आजीवन आपने अपना समय सत सिमरण, सम पद शान्त रहनी, निष्काम सेवा, ईश्वर महिमा और लाखों लोगों को सदाचारी जीवन तथा सत्मार्ग बोध कराने में व्यतीत किया। उन्हें सर्वत्र तथा प्रत्येक जीव में ईश्वर की ज्योति दिखाई देती थी। आप समता अथवा अनुरूपता और समानता की जीती जागती मूर्ति थे।

प्राचीन काल से समय-समय पर और स्थान-स्थान पर ईश्वर के प्यारे और सत् विश्वास वाले सत्पुरुष पैदा होते आए हैं, जिन्होंने आत्मदर्शन और योगारूढ़ अवस्था की प्राप्ति के साथ-साथ अन्धकार में भटकते हुए मनुष्यों को सत्मार्ग दिखाया: यह जीवन क्या है? संसार क्या है? और सत् किसे कहते हैं? इन मौलिक आध्यात्मिक प्रश्नों पर उन्होंने अपने-अपने ढंग से प्रकाश डाला है। उनका पवित्र जीवन और अमूल्य शिक्षा जन-जन का पथ प्रदर्शन करता रहा है। वे सत्पुरुष कहीं भी हुए हों, उनके भावों, वाणी एवं प्रवचनों का प्रभाव सारी सृष्टि पर पड़ता है।

सत्य एक है। विभिन्न धर्मों के प्रवर्तकों, अवतारों और सत्पुरुषों ने उसी सत्य को ब्रह्म, निर्वाण, आसमानी बाप, अल्लाह, एक ओंकार, समता तत्व, इत्यादि शब्दों से अभिहित किया है। सत्य की व्याख्या के अतिरिक्त उन्होंने अपने समय की सामाजिक कुरीतियों और विकृत परिस्थितियों को सुधारने की ओर भी ध्यान दिया।

सद्गुरु महात्मा मंगत राम जी का जन्म ऐसे समय में हुआ

जबकि पंजाब क्षेत्र और सारे देश की दशा अच्छी नहीं थी। कई प्रकार के सम्प्रदाय, पन्थ और मत-मतान्तर तो थे ही, विदेशी शासन ने पारस्परिक विरोध और बढ़ा दिये थे। देश के लोग जादू-टोने, बहुत से वहमों, भ्रष्ट रीति-रिवाजों और विषय वासनाओं में ग्रसित थे। जगह-जगह जाकर लोगों को नश्वर शरीर के यथार्थ लक्ष्य, शाश्वत शान्ति और उसकी प्राप्ति के साधनों से अवगत किया और अनेक प्रकार के भ्रमों और अन्य बुराईयों एवं गलत धारणाओं की ओर जनता का ध्यान आकर्षित कर उनका समाधान बतलाया।

बचपन से ही महात्मा जी की सम्पूर्ण वृत्ति, विचारधारा और भक्ति परमेश्वर पर केन्द्रित थे। निष्कामता, निर्मानता, उदासीनता, निश्चलता और परोपकार आपके स्वभाव के अभिन्न अंग बन चुके थे। आपकी बहुमूल्य शिक्षा “श्री समता प्रकाश” और “श्री समता विलास” नामक दो ग्रन्थों में उपलब्ध है। दोनों ग्रन्थ जीवन के गूढ़ रहस्यों का ज्ञान देते हैं। ईश्वरीय वाणी और अनमोल वचनों का संग्रह-ये दोनों ग्रन्थ निश्चित ही समस्त मानव जाति के लिए शान्ति और कल्याण के स्रोत हैं। पूर्ण सन्तों के आशीर्वाद भरे वचन प्रभु प्राप्ति के मार्ग का भेद खोलते हैं। इस पर सद्गुरुदेव मंगत राम जी का यह भी कमाल समझिए कि आप मानव जीवन के हर मोड़ पर प्रकाश स्तंभ की भांति दृष्टिगत होते हैं। जीवन में जीवन शक्ति की पहचान और इस जीवन को सुगान्धित बनाने के लिए आपने अत्यन्त सरल शब्दों में प्रेरणा दी है।

4 फरवरी, 1954 को शरीर त्यागने से पूर्व श्री सत्गुरुदेव का अन्तिम संदेश था- “इनका मिशन पूरा हो चुका है। वाणी प्रगट हो चुकी है। जैसा कोई रोगी होगा, अपने रोग का इलाज तलाश कर लेगा।

यह लघु पुस्तिका एक अनुपम सत्पुरूष की संक्षिप्त कथा और उनकी अनमोल वाणी और सत् वचनों में से लिये गये कुछ मोतियों



का संचन (संग्रह) है। आशा है कि जिज्ञासु पाठकगण इस महान सन्त के जीवन और शिक्षा के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के इच्छुक होंगे।

**दीनानाथ सराफ**

अक्टूबर, 1990

मुखी सेवादार संगत समतावाद

नोट : यह पुस्तिका दास की उर्दू किताब का अनुवाद है, इस प्रयत्न में प्रेमी भाई राम लाल जी गुप्ता और हरबन्स लाल जी चावला का आभारी हूँ।

# विषय-सूची

पृष्ठ संख्या

1.	संक्षिप्त जीवन-परिचय	
	● अनोखा बचपन	1
	● आत्म साक्षात्कार और सेवा भाव	4
	● जीवक उपार्जन के साथ-साथ भक्ति	9
	● भ्रमण, भक्ति और लोक सेवा	15
2.	समता-महत्व और उपदेश	26
3.	असली खुशी, शाश्वत शान्ति	30
4.	आध्यात्मिक उन्नति के मुख्य साधन	33
5.	सदाचार	40
6.	परम गति योग - हालते मेराज़	46
7.	विश्व शान्ति सन्देश	50
8.	कुछ और चुनिन्दा उद्धरण	
	(क) ग्रन्थ श्री समता प्रकाश में से	53
	(ख) अमृत उपदेशों से	71
	(ग) प्रश्नोत्तरों के रूप में	85
9.	आरती, समता मंगल	95-96

ॐ

समता अपार शक्ति  
ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

# 1. जीवन परिचय

## अनोखा बचपन

**जन्म**—वह वंश बड़ा भाग्यशाली है और वह भूमि जो निश्चित ही पावन है जहाँ पर प्रभु का प्यारा पैदा हुआ हो। श्री मंगत राम जी एक बड़े शुद्धाचारी परिवार में मंगलवार 9 मघर सं० 1960 विक्रमी तदानुसार 24 नवम्बर, 1903 को ग्राम गंगोठियाँ, ब्राह्मणां, तहसील कहूटा ज़िला रावलपिण्डी (पाकिस्तान) में अवतरित हुए।

**पूर्वज**—आपके पिता माननीय पं० गौरी शंकर जी का जीवन बड़ा सदाचारी था। वह रावलपिण्डी के धनी व्यक्ति सरदार सुजान सिंह के मुखत्यारे आम (सर्वे सर्वा अधिकारी) थे। परन्तु नौकरी के कर्तव्य निभाते हुए भी उनका अधिकतम समय ईश्वर की याद में गुज़रता। आपके पितामह पं० सुन्दर दास जी बड़े ईश्वर भक्त थे। उनके जीवन का बहुत बड़ा भाग सुनसान और घने जंगलों में ईश्वर की याद में गुज़रा। उनकी आयु 125 वर्ष थी। आपकी माता श्रीमती गणेशी देवी एक सरल, सेवारत, भक्ति भाव युक्त देवी थीं।

मंगत अभी छोटे ही थे कि उनके पिताश्री का देहान्त हो गया और उनका पालन पोषण मुख्यता आपकी माता द्वारा हुआ। बड़े भाईयों की देख-रेख भी साथ थी। आपकी माता जी का आप से बड़ा प्यार था। बाल्यकाल से ही आपके असाधारण शान्त स्वभाव को देख-देख कर उनको बड़ा अचम्भा होता था।

**मनोवृत्ति**—जब आपकी उम्र तीन वर्ष की ही थी आप रात्रि के समय उठ कर बिस्तर पर बैठ जाते। माँ की आंख खुलती तो क्या देखती कि प्यारा मंगत बैठा हुआ है। उनके मन में ख्याल आता कि शायद बेटा डर के मारे उठ कर बैठ गया है। कहती “मंगत क्यों बैठ गए हो? सो जाओ लाल”। आगे से उत्तर मिलता “माँ, कुछ नहीं ऐसे ही बैठा हूँ।

कोई बात नहीं माँ”। यह कह कर काफी देर तक बैठे रहते (ईश्वर की याद में) और फिर सो जाते।

**पाठशाला-** पांच वर्ष की उम्र से मां ने आपको डेरा खालसा की पाठशाला में दाखिल करवा दिया जो कि गंगोठियां गांव से तीन मील की दूरी पर थी। वहां पर चौथी कक्षा तक पढ़े। मां प्रातःकाल परांठे बना दिया करती कि बच्चा स्कूल में दोपहर को खा सके, किन्तु मंगत दूसरे निर्धन बालकों की रूखी सूखी रोटियां देखकर परांठे उन्हें दे देते और उनकी सूखी रोटियां स्वयं खाकर खुश होते।

एक दिन मां ने अपने बेटे मंगत का अतलस का नया कोट पहना कर पाठशाला भेजा। वहां आपने एक सहपाठी को फटे वस्त्र पहने देखकर तुरन्त अपना कोट उतार कर उसे पहना दिया और उसका फटा पुराना कोट स्वयं पहन लिया। स्पष्ट है कि बचपन से ही आपके स्वभाव में सादगी, बलिदान और दूसरों को प्रसन्न करने का कितना अधिक भाव विद्यमान था।

## विवेकशीलता और भक्ति

आप बड़े कुशाग्र बुद्धि थे। पाठशाला का पाठ वहीं याद हो जाता। कक्षा में प्रथम आया करते थे। पाठशाला से लौटते समय अकसर रास्ते में रुक जाते और पुस्तकें एक ओर रख कर ईश्वर की याद में बैठ जाते। देर से घर लौटते तो मां सीधा घर आने को कहतीं। आखिर मां को ख्याल आया कि संभवतः इनके दिमाग पर किसी भूत प्रेत का असर है। वह कभी मौलवियों से तावीज़ लाती कभी पंडितों से पूछती, किन्तु सब व्यर्थ। लगभग आठ वर्ष की अवस्था में आपने आधी रात को उठ कर गांव के निकट एक गहरी खाई में बहती हुई नदी के किनारे एक बड़े पत्थर पर अपने प्रियतम के ध्यान में बैठना शुरू कर दिया। इतनी छोटी उम्र में घर और नींद के आराम को त्याग एक निर्जन स्थल पर जाना एक साधारण कार्य न था।

गाँव गंगोठियाँ के निकट पीर ख्वाजा नामक एक घना जंगल था।

प्रायः लोगों को उसमें दिन में भी जाने का साहस नहीं होता था। वे पीर को खुश करने के लिए बलि दिया करते थे। इधर मंगत राम जी थे जो बचपन में भी उस जंगल में जाने से न घबराते। मां समझाने की कोशिश करती, परन्तु उसकी बात को आप हँस कर टाल देते। कहते “मां ! डरा न करो, इन्हें परी ख्वाजा कुछ नहीं कहता।”

**लाट पादरी-** पांचवी कक्षा से आठवीं कक्षा तक कल्लर गाँव के स्कूल में शिक्षा ग्रहण की। यह स्थान गंगोठियाँ से लगभग छः मील की दूरी पर था। आपकी बड़ी बहन श्रीमती करतार देवी उसी गांव में विवाहित थीं। आपने बहन के घर रह कर पढ़ाई की। इनका अपने बहनोई पं० साईं दास जी से भी गहरा प्रेम था। पाठशाला में आपकी प्रभु प्रेम में लगन, उच्च कोटि के सदाचार और विवेकशीलता को देख कर अध्यापकगण प्रायः आपको सदाचार पर बोलने के लिए कहा करते। यही कारण था कि वहां पर आपको लाट-पादरी (ईसाइयों का धार्मिक गुरु) के नाम से पुकारा जाने लगा।

एक बार जब आप कल्लर स्कूल में पढ़ते थे तो पाठशाला का निरीक्षण करने इन्सपेक्टर ने आना था। मुख्याध्यापक ने सब बालकों को निरीक्षण के दिन बढ़िया वस्त्र पहन कर आने को कहा। आप रोज़ाना की भांति सादा वस्त्रों में पाठशाला आये। इस पर अध्यापकगण ने आपत्ति की तो, आपने कहा:- “विद्यार्थी का सम्मान अच्छी पढ़ाई और नेक चलन से होता है न कि चमकीले भड़कीले वस्त्रों से। इन्सपेक्टर महोदय इनकी अक्ल देखेंगे या कपड़े”।

**योग्यता और आध्यात्मिक चर्चा-** आप एक अच्छे विद्यार्थी की तरह पाठशाला से लौटते ही पढ़ाई का काम करते। इसमें उन्हें अधिक समय न लगता। स्मरण शक्ति अत्यन्त तीव्र थी। जो बात एक बार पढ़-सुन लेते, उसे न भूलते थे। काम समाप्त करके एकान्त में बाहर चले जाते और सांयकाल लौटते। उसके उपरान्त प्रायः आप और पं० साईं दास जी आपस में आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा में व्यस्त रहते।

# आत्म साक्षात्कार और सेवा भाव

## चालीसा ( चिल्ला )

मंगत बचपन से ही प्रभु के अथाह प्रेम के रंग में रंगे हुए थे। सातवीं कक्षा में पढ़ रहे थे कि आपने अपने बहनोई से चिल्ला काटने की चर्चा की और उनसे स्वीकृति ले ली। इनकी बहन को अपने मायके गंगोठियाँ भेज दिया गया। उसके बाद आपने चालीस दिन का चिल्ला काटा अर्थात् चालीस दिन तक लगातार रात-दिन प्रभु भक्ति में लगाए। तेरह वर्ष की अल्प आयु में चालीस दिन की अटूट तपस्या सरल कार्य नहीं थी। सभी लोग हैरान थे। चालीसा पूरा करने पर यद्यपि शरीर कमजोर हो गया तथापि चेहरे पर एक विशेष प्रकार का तेज झलकने लग गया था।

## एक मोड़

आठवीं कक्षा में पहुँचते ही बहुत उदास रहने लगे और कहना शुरू कर दिया- “इन्हें दूसरी पढ़ाई पूरी करनी है”। सन् 1916 के अन्तिम दिन थे। बड़े दिनों की छुट्टियों में पुस्तकें आदि सारा सामान लेकर गंगोठियाँ पहुँचे। घर आये हुए अभी दो चार दिन ही हुए थे कि उदासी बहुत बढ़ गई। रोना और आहें भरना शुरू हो गया। अधिकाधिक अलग रहते। एक दिन शाम को जंगल पीर ख्वाजा में बैठे हुए थे कि अन्धेरा हो गया। पर घर लौटने को मन नहीं करता था। अन्त में मां का ध्यान आ गया और वहां से चल पड़े। रास्ते में एक दीवार पर आकर बैठ गये। इधर मां लैम्प लिए हुए आवाजें लगाती आ पहुँची। आवाज़ सुन कर उठ खड़े हुए। मार्ग में मां बहुत कुछ कहती रही। चुप-चाप सुनते रहे। ध्यान आया कि मां का सम्बंध भी कितना आश्चर्यमय होता है। बच्चे से मां को कितना स्नेह होता है। जब तक खा न ले, उसके गले से कुछ नहीं उतरता। .....जितना एक मां बच्चे से प्यार करती है, उतना प्यार यदि प्रभु से हो जाए तो काम बन जाए ..... अच्छा ईश्वर जैसी तेरी आज्ञा।

## आत्म साक्षात्कार

सर्दी उन दिनों जोरों पर थी। मां गांव की अन्य स्त्रियों के साथ पूर्ववत् चरखा कात रही थी। आप रज़ाई ओढ़ कर लेट गये। जब दूसरी स्त्रियां चली गईं तो उसने पूछा “मंगत तबियत तो ठीक है ना, आज जल्दी क्यों लेट गए हो।” रज़ाई के अन्दर से ही जवाब दिया- ‘नींद आई हुई है।’ मां भी लेट गईं। थोड़ी देर के बाद उठ कर पास आकर बोली- ‘मंगत! बाजों की आवाज़ आ रही है, तू क्यों बैठा हुआ है, सोता क्यों नहीं, उत्तर मिला’ माता जी, नींद नहीं आ रही है, सोने लगा हूं। कोई बाजे साजे नहीं बज रहे हैं। स्वप्न देखा होगा।’ उनके सामने फिर रज़ाई ओढ़ कर सो गए। मां के सोते ही फिर उठ बैठे। दो-तीन घंटे बीतने के बाद एक दम कई सूर्यो जैसी रोशनी हो गई। छत्तीसों प्रकार के राग रागनियां और ढोल बजने लगे .....बाहर की कोई सुध न रही। मां ने ज़ोर से आवाज़ दी-“मंगत यह प्रकाश कैसा है?” तब इतना ही कह सके, “माता! शान्त रहो।” आंखें खोलीं तो बाहर से जग-मग रोशनी देखने में आई। देख कर नेत्र फिर बन्द कर लिए ताकि वह मस्ती बनी रहे ..... फिर ज़ोर से आवाज़ आई “मंगत यह रोशनी कहां से आई है?” कहा “मां! चुप होकर लेटती क्यों नहीं हो”। इतना कहना था कि सारी माया लोप हो गई। नेत्र बन्द करके देखा तो वैसी ही मस्ती छाई हुई थी। फिर झट-पट उठ कर देखा, मां सो रही थी। बिस्तर छोड़ कर पीर ख्वाजा जंगल की ओर चल दिए। बाहर काली घटाएं छाई हुई थीं। जंगल के अन्दर एक जगह थोड़ी लोई नीचे ऊपर करके बैठ गए। फिर न ठण्ड रही न अन्धेरा। प्रभु कृपा से सारी रात बीत गई। जब खुमारी (मस्ती) उतरी तो देखा कि काफी दिन निकल आया है। उधर ही स्नान कर घर पहुंच गए।

आगे माई भाग (आपकी चचेरी भाभी भागवन्ती) धूप में बैठती गीता पढ़ रही थी। जैसा कि उनका नियम था। आप वहीं बोरी पर बैठ गए और भाभी से दिन का पाठ आरंभ से पढ़ कर सुनाने को कहा। वह



सुनाने लग गई। रात को जो महिमा देखी थी, वैसा ही विचार सुना। आप पहले बैठे सुनते रहे। तत्पश्चात् आपके नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी। गीता का अध्याय जब समाप्त हुआ तो आप उठ कर अन्दर चले गये। इतना कहते गए:- “माता! तू धन्य है। मां से इस विषय में कुछ न कहना”। कमरे में चारपाई पर बैठ गए। माई भाग के बहुत पूछने पर भी कुछ न बोले।

## महामन्त्र

उस रात के तीसरे पहर पानी के किनारे खड्ड में बैठे हुए महामन्त्र के आरंभ के तीन शब्द “ओ३म् ब्रह्म सत्यम्” प्रकट हुए। दूसरे दिन “निरंकार, अजन्मा, अद्वैत पुरखा” और तीसरे दिन “सर्व व्यापक कल्याण मूरत परमेश्वराय नमस्तं प्रकट हुए”। प्रतिदिन एक कागज़ पर लिख लिया करते।

परमेश्वर को जैसा बालक भक्त मंगत राम ने अनुभव किया अर्थात् सत्स्वरूप के दिव्य प्रकाश को जैसा उन्होंने देखा, प्रभु प्रेमियों की ज्ञान प्राप्ति के लिए “महामन्त्र” के इन पवित्र शब्दों में बयान किया है। आगे चल कर इस “महामन्त्र” की महिमा आपकी वाणी ग्रन्थ श्री समता प्रकाश के एक खण्ड में वर्णित है। वहां आपने इस मंत्र के तेरह अक्षरों में से हर एक को विस्तार से समझाया है। पाठकगण कृपया महामंत्र को मूल रूप में इस पुस्तिका के आरंभ में देखें।

यहां इतना लिखना ही पर्याप्त होगा कि यह “महामंत्र” बड़ा प्रभावोत्पादक है। इसमें विशेष आध्यात्मिक शक्ति निहित है। सच्चे हृदय से बार-बार इसका पाठ करने और प्रत्येक शुभ कार्य के प्रारंभ में इसका उच्चारण करना लाभप्रद एवं सहायक माना गया है।

## अन्दर की आवाज़

आत्म साक्षात्कार के अनूठे अनुभव के पश्चात् प्रभु प्रेम का सागर आपके अन्दर ठाठें मारने लगा। एक विचार आया कि पूरन भगत के कुएं पर जो कि स्यालकोट (पश्चिमी पंजाब) में है, जा कर कनफटे योगियों

में शामिल हो जाएं। तदनुसार एक दिन रेल गाड़ी पर सवार हो गए। वजीराबाद गाड़ी बदलनी थी, वहां आप गाड़ी से उतर कर स्टेशन के निकट लकड़ी की मण्डी में पड़ी गेलियों पर चादर बिछा कर विश्राम करने के लिए सो गए। प्रातः उठकर स्यालकोट वाली गाड़ी की बजाए दूसरी गाड़ी पर सवार हो गए और लाहौर पहुंच गए। स्टेशन के बाहर लाला मूलचन्द की सराय में विश्राम किया। वहां रात को अपने अन्दर से आवाज़ आई- “तुम्हारा मिशन कनफटा साधु बनना नहीं, बल्कि जनता को सत्य, सदाचार और आध्यात्मिकता का मार्ग दिखाना है। अन्ध विश्वासों में फंसे लोगों को सत्मार्ग पर लाना है और उन्हें तथाकथित साधुओं के चंगुल से छुड़ाना है। अपना निजी क्रियात्मक जीवन पेश करके उनका सुधार करना है और अज्ञानता की बाढ़ में डूबते हुए जीवों की रक्षा करनी है”।

इस आंतरिक वाणी को सुनकर आप लाहौर से गंगोठियां लौट आए और वहां से कल्लर जाकर फिर पढ़ाई शुरू कर दी।

**सेवा**-जब आप आठवीं कक्षा में पढ़ रहे थे कि एक बार निरीक्षण के दौरान इन्सपेक्टर महोदय ने लड़कों से प्रश्न किया कि खिद्मत (सेवा) क्या है? खिद्मत कैसे करनी चाहिए? खिद्मत के बदले में क्या मिलता है? अध्यापक सोच में पड़ गए कि इतने गंभीर प्रश्न का उत्तर बालक कैसे देंगे। किन्तु मंगत का हाथ खड़ा देखकर उनके अन्दर खुशी की लहर दौड़ गई और साथ ही वे हैरान थे कि वह छोटा सा बालक क्या उत्तर देगा। किन्तु, देखिए कि कितने उच्च स्तर का उत्तर दिया गया:

“संसार की प्रत्येक वस्तु सेवा कर रही है। सूरज, चांद, सितारे, हवा, पानी, पत्थर, जान, बेजान (चेतन जड़) जितनी भी खुदा की बनाई कायनात (सृष्टि) देखने में आती है, सब चीजें खिद्मत (सेवा) कर रही हैं। हर एक चीज़ एक दूसरे की खिद्मत करने के लिए ही दुनिया में पैदा होती है। सिवाए इन्सान के सब चीजें लागर्ज़ (निष्काम) होकर दूसरों को

सुख दे रही हैं। इन्सान गर्ज (कामना) रखता हुआ एक दूसरे की खिद्मत करता है। हत्ता कि (यहां तक कि) मां, बाप भी गर्ज करके औलाद की सेवा करते हैं, कि बड़ा होकर हमारी खिद्मत करेगा। गर्ज रख कर दूसरों की खिद्मत की जाती है। गर्ज रख कर खानदान (परिवार) की, दोस्तों की, पीरों फ़कीरों, गुरुओं की खिद्मत इन्सान करता है। गर्ज रखकर खुदा की भी खिद्मत पुण्य दान वगैरा (इत्यादि) करता है। बगैर गर्ज के इन्सान खिद्मत नहीं करता। सबसे बड़ा फर्ज (कर्तव्य) इन्सान का लागर्ज खिद्मत (निष्काम सेवा) करना है। खिद्मत करके ही सब लोग बड़े से बड़ा पद यानी ओहदा हासिल करते हैं। अच्छे कहलाते हैं। ईसा, मुहम्मद, राम, बुद्ध, कृष्ण, नानक, कबीर सबने खुदा की याद और खलकत (जनता) की खिद्मत पर ज़ोर दिया है। खिद्मत करने से हर जगह इज़्जत, मान, शान मिलती है। खुदा के घर में भी खिद्मत करने वाले को जन्नत, (स्वर्ग) में जगह मिलती है।

खिद्मत का मतलब (अर्थ) है सेवा। दुनिया में अपने से बड़े बुजुर्ग माता पिता, गुरु की खिद्मत करनी सबसे बड़ा फर्ज है। जो भी बड़ा बुजुर्ग रिश्तेदार, दोस्त हो उसकी खिद्मत करनी, शहर वालों की, देश की खिद्मत, सारे संसार की खिद्मत जितनी-जितनी हिम्मत (समर्थ) पड़ती जावे खिद्मत करता जावे। गर्ज वाली खिद्मत के इवज़ाने (बदले) में दुनिया के सुख आला से आला (बढ़िया से बढ़िया) मिलते हैं। लागर्ज खिद्मत (निष्काम सेवा) से लाज़वाब (अक्षेय) सुख को हासिल कर सकता है। जो कभी खत्म (समाप्त) होने वाला नहीं। खुदा हम सबको नफ़रत (घृणा) रंजत से परे रखता हुआ हर एक रूह की खिद्मत करने की अक्ल (बुद्धि) बख़्शे। जिससे सही (ठीक) रास्ता उस खुदा के पास पहुंचने का मिलता है। असली खिद्मत खुदा की और खुदा के बन्दों की खिद्मत करना है।”

इन विचारों को सुनकर निरीक्षक महोदय और सब अध्यापकगण बहुत खुश हुए और आपस में बातें करने लगे कि लड़का तो छोटा सा है, मगर बातें बड़ी उच्च कोटि की कही हैं।

## असली पढ़ाई

शाम को मुख्याध्यापक श्री सुन्दर दास जी ने आपके घर पर बुला कर कहा—कि आप एम०ए० तक पढ़ें। वे पढ़ाई का खर्चा अपने पल्ले से देंगे। आपने विनम्रतापूर्वक मुख्याध्यापक का धन्यवाद किया और कहा—यह एक तालीम (विद्या) ही जारी रख सकते हैं। सांसारिक विद्या इनके लिए नहीं है। यह तो अब उसी विद्या को पूरा करेंगे, जिससे संसार की भूली भटकी जनता का भला हो”।

मिडल परीक्षा में आप प्रथम स्थान पर रहे। मुख्याध्यापक जी ने अध्ययन आगे जारी रखने की पुनः सलाह दी पर आप नहीं माने। जब आपने स्कूल की पढ़ाई समाप्त कर गंगोठिया की ओर प्रस्थान किया तो आपके सहपाठी और अध्यापकगण आपकी जुदाई सहन न कर सके और पाठशाला से तीन मील तक पैदल छोड़ने आए।

यह था आपके बचपन और विद्यार्थी जीवन का वृत्तान्त जबकि प्रभु प्रेम आपके रोम-रोम में भरा हुआ था।

## जीविका उपार्जन सहित उपासना

**नौकरी-** पढ़ाई के बाद गंगोठियाँ लौटने पर सारा समय प्रभु के ध्यान में मगन रहते। एक दिन मां ने कहा:- “बेटा! कुछ काम करो ताकि जीवन का निर्वाह अच्छी तरह से हो सके। इस पर आपने थोड़े दिन पेशावर में नौकरी की। वहां आपके बड़े भ्राता पंडित ठाकुर दास जी रहते थे। जिस ऊंची अवस्था को आप प्राप्त कर चुके थे, वह भला कब तक छिपी रह सकती थी। कार्यालय में भी आपके सहकर्मियों पर असर होने लगा। कई प्रकार के अद्भुत घटनाएं भी होने लगीं।

किन्तु एक बहुत ही आश्चर्यजनक घटना घटी जिसके कारण आपको नौकरी छोड़, पेशावर छोड़ना पड़ा। घटना इस प्रकार थी :-

**करामात** - एक दिन आप अपने भ्राताश्री के घर बैठे थे। बख्शी हीरा नन्द जी मटोर निवासी (ज़िला रावलपिण्डी) भी वहीं मौजूद थे। आध्यात्मिक विषय पर चर्चा हो रही थी। बख्शी जी ने प्रहलाद भगत द्वारा गर्म खम्बे को अपनी भुजाओं में लपेट कर उससे चिपटने और फिर जीवित रहने की कहानी पर आशंका प्रकट की। उनका कहना था कि सब कपोल कल्पित है। ऐसा होना असंभव है। श्री मंगत राम जी ने उत्तर दिया कि ईश्वर विश्वासी व्यक्ति के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। किन्तु बख्शी जी न माने और अपनी जिद पर अड़े रहे और साथ ही यह कह दिया कि कोई ऐसा करके तो दिखलाए। आप रिद्धि-सिद्धि या करामातें दिखाने के विरोधी रहे हैं। मगर एक प्रभु भगत की जीवन घटना को सच्ची सिद्ध करने के लिए निकट ही तन्दूर में, जो अंगारों की भांति लाल था और आग तेज़ी से दहक रही थी, झट अपनी एक टांग को बिना किसी संकोच के डाल दिया। कुछ देर में पास बैठे हुए दफ्तर के साथियों और दूसरे लोगों ने पास जाकर इनकी टांग को खींच कर तन्दूर से बाहर निकाला। क्या देखते हैं कि आग का तनिक भी असर टांग पर नहीं पड़ा यहां तक कि बाल तक भी नहीं जले। इस अत्यन्त अद्भुत घटना को देख कर सब लोग चकित रह गए। इस खबर का फैलना और सर्व साधारण लोगों को इस करामात के कारण इनकी ओर प्रवृत्त होना फ़कीरी स्वभाव वाले मंगत राम जी के लिए दूभर हो गया। “इन से दो मालिकों की नौकरी नहीं हो सकती” यह कह कर नौ मास की नौकरी छोड़कर गंगोठियाँ लौट आए।

**खड्डियों का काम-** पुनः सारा समय सत् सिमरण और सतनाम अभ्यास में व्यतीत होने लगा। पहले की भांति प्रातः तीन बजे उठकर पीर ख्वाजा जंगल में चले जाते और घंटों सत् सिमरण में तल्लीन रहते।

आपके बड़े भाईयों ने इस बात को बुरा माना कि आपने नौकरी छोड़ दी है। वे लोग आपको कोई और काम करने पर विवश करने लगे। गंगोठियाँ के निकट ही एक छोटे से कस्बा सागरी में आपको खड्डियां लगा कर कपड़ा तैयार करने को कहा गया। यह काम भी आपने थोड़ी अवधि तक ही किया। आप के सगे सम्बन्धियों को यह बात नहीं जची। उन्होंने आर्थिक सहायता देना बन्द कर दिया, इस विचार से कि संभवतः इसी तरह किसी काम में इनकी रुचि बढ़े।

**चिकित्सा-** आपने मां की सलाह पर आजीविका कमाने के लिए हकीमी का काम शुरू किया। थोड़ी ही देर में आपके इस कार्य में सिद्धस्त होने की चर्चा दूर-दूर तक फैल गई। तब भी रात्रि का अधिकतर भाग बाहर जंगल में ही गुज़ारते और लगभग 9 बजे सुबह घर वापिस आते जबकि काफी संख्या में रोगी आपकी प्रतीक्षा में बैठे होते। आप थोड़े ही समय में रोगियों को देख कर दवा लिख देते या अगर बनी होती तो दे देते। दवा का दाम किसी से मांगते नहीं थे। अपनी खुशी से अगर कोई दे जाते, उसमें अपना और माता जी का खर्चा निकाल कर शेष ग़रीबों और मांगने वालों में बांट देते। जिस रोगी को देखते कि बहुत ग़रीब है और खाने को भी लाचार है, तो दवा के साथ-साथ आहार भी मुफ्त मुहैया करते। जब आप रोगियों को उनके घरों में देखने जाते तो कई बार अपने हाथों से उन्हें दलिया बना कर खिलाते थे और गंदगी भी साफ करते थे। जाने की कोई फीस न थी और न ही रोगियों के घर से कुछ खा-पीकर आते थे। इस क़दर निस्वार्थ सेवा से प्रभावित होकर मुसलमान भाई आपको “पीर साहेब” कहा करते थे। जब तक माता जी जीवित रहीं, आपने रोगियों की चिकित्सा का काम जारी रखा। इन वर्षों में जनता की निष्काम सेवा के साथ-साथ घोर तपस्या का क्रम पूर्ववत् चलता रहा। इस बीच माताजी और बहनों ने बड़ा ज़ोर दिया कि विवाह कर लें, मगर आप बिल्कुल न मानें। इनको तो केवल एक ईश्वर प्रेम के अतिरिक्त

और कुछ भी नहीं भाता था। मार्च, 1928 में माता जी के निधन के बाद आपने तत्काल हकीमी का काम छोड़ दिया और सारा समय प्रभु सिमरण में लगाना आरंभ कर दिया। दिन में केवल एक बार भोजन खाते और उसमें गेहूं की एक छोटी सी चपाती और छाछ में पका हुआ थोड़ा सा भाग होता था। (आगे चलकर आहार और भी सादा हो गया। वर्षों तक आपने दिन में एक गिलास दूध-चाय का ही सेवन करके समय व्यतीत किया।)

**आगे क्या-** गहन तपस्या, सुदृढ़ सत् स्मरण और पूर्ण ब्रह्मचर्य के बल पर आपको योग की कामिल अवस्था प्राप्त हो चुकी थी। वैराग्य का अथाह सागर आपके अन्दर ठाठें मार रहा था। अब तो कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रह गया था सिवाए इस काम के कि वासनाओं की अग्नि में तपते हुए साधारण लोगों को जीवन के वास्तविक लक्ष्य, सच्ची खुशी और शीतलता से अवगत किया जाए और साथ ही आध्यात्मिक उन्नति के सरल साधन बतलाएं जाएं।

**महत्वपूर्ण भेंट-** जुलाई, 1928 का जिक्र है कि श्रीमहाराज जी (बचपन में गांव के लोग श्री मंगत राम जी को “भगत जी” कह कर बुलाते थे। बाद में उन्हें “महाराज जी” कहा जाने लगा) संयोगवश रावलपिंडी पहुंचे। इन्हीं दिनों अहमदाबाद (गुजरात) के खाड़िया गेट स्थित मंदिर कबीर साहेब के महन्त रतनदास जी, जो अनेक तीर्थ स्थानों का भ्रमण कर चुके थे, किसी पूर्ण गुरु की खोज करते-करते वहां आये थे। वह एक सुबह नाला लई चोहों पर चशमों के किनारे बड़े उदास और निराश होकर बैठे थे, मन में यह सोच कर कि क्या इतना बड़ा भारत देश सिद्ध पुरुषों से विहीन हो चुका है। सहसा ही श्री महाराज जी स्वयं उस जगह आ पहुंचे और महन्त जी से उनकी शंकाओं के बारे में पूछा। महन्त जी ने तीन-चार प्रश्न महाराज जी के समक्ष रखे। अपने प्रश्नों के पूर्णतयः तसल्ली दायक उत्तर पाकर उन्हें विश्वास हो गया कि पूर्ण योगी ने निराशा की स्थिति में आशा की किरण दिखलाई है। तत्पश्चात् गंगोठियाँ

जा कर और वहां कुछ दिन ठहर कर महाराज जी के सदुपदेशों से लाभान्वित हुए। महाराज जी की असीम कृपा का वर्णन महन्त जी ने इन शब्दों में किया है:-

“आखिर मेरे पूर्ण भाग्य से मुझ पर ईश्वर की दया हुई तो इन महापुरुषों का दर्शन सहज स्वभाव ही उस वक्त हो गया जबकि मैं बहुत फिक्रमन्द (चिन्तित) और घबराया हुआ था। एक दो घड़ी के सत्संग से मेरे सब संशय दूर हो गये।” महन्त जी का यह भी कहना है कि श्री महाराज जी की कृपा दृष्टि से मस्ती की जो स्थिति उन पर छाई रही, उसका वर्णन करना लेखनी और जिह्वा की शक्ति से परे है।

महन्त जी की प्रार्थना पर महाराज जी आखिर नवम्बर, 1938 में अहमदाबाद पधारे। वहां खाडिया गेट के पास कबीर मन्दिर में आपको ठहराया गया। कई साधकों और जिज्ञासुओं ने आप से योग मार्ग सम्बन्धी कई कठिनाईयों का पूरा समाधान कराया। अहमदाबाद में ठहरे हुए सत्गुरु देव ने अनुभवी वाणी उच्चारण की, जिसे महन्त जी ने लेखनबद्ध कर लिया और तत्पश्चात् उसे “चिरंजीव गोष्ट” नामक पुस्तक में छपवाया। इसके अतिरिक्त वहां “योग चिन्तामणि” भी प्रकाशित हुई जिसमें सहज योग के गुह्य रहस्यों को सरल शब्दों में वर्णित किया गया है। योग चिन्तामणि में श्री सद्गुरुदेव जी ने गुप्त ज्ञान और ब्रह्म योग से संबंधित सन्त रतन दास जी पर कई विशेष अनुकम्पा का वर्णन किया है।)

**यज्ञ**-लोगों को सत्संग की ओर उन्मुख करने के लिए महाराज जी ने सबसे पहले गांव गंगोठियाँ में यज्ञ का क्रम जारी किया, बिल्कुल निजी बचत और परिश्रम से। पहला यज्ञ सन् 1927 की शरद ऋतु में हुआ। इसके बाद ऐसे यज्ञ हर वर्ष सन् 1946 तक होते रहे। (गंगोठियाँ में एक पक्के सत्संग शाला का भी निर्माण हो चुका था) सत्पुरूष ने अपनी अमृत वाणी में यज्ञ की महानता का वर्णन किया है। इसके लाभों में



निष्काम सेवा की शिक्षा शामिल है। यज्ञ में आये हुए सब जीवों को अपनी आत्मा का ही रूप समझ कर सेवा करनी यज्ञ का सही स्वरूप बताया है। आप फरमाते हैं कि यज्ञ कर्म से अनेक क्रूर कर्मों का नाश होता है।

यज्ञ कर्म का ऊंच परतापा। कोटि उपद्रव हरे सन्तापा॥  
यज्ञ कर्म धर्म परगासे। यज्ञ कर्म से शान्त निवासे॥  
ऐसे यज्ञ में जो सेवा कीजे। तन मन धन सफल कर लीजे।  
समता भाव सब में दिखलाई। एको ब्रह्म सरब दरसाई॥  
क्या करता क्या भोगता, सब ही प्रेम समाये।  
“मंगत” महिमा यज्ञ की, देव मुनी नित गाये॥

**आश्रम-** देश के बटवारे के बाद जगाधरी (जिला अम्बाला) में, जहां संगत समतावाद, समता योगाश्रम की बुनियाद डाली गई। हर साल वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर यज्ञ (लंगर) होता है, जिसमें हजारों लोग भाग लेते हैं और भी अनेक स्थानों जैसे दिल्ली, देहरादून, आगरा, अम्बाला शहर व कैन्ट, बरेली, हल्द्वानी, पठानकोट, फिरोजपुर, मलोट मंडी, श्री गंगानगर, में समता योगाश्रम अथवा सत्संग शालाएं बनी हुई हैं। वार्षिक सत्संग सम्मेलनों के समय यज्ञ का भी प्रबन्ध होता है।

“संगत समतावाद रजिस्टर्ड” की स्थापना सितम्बर, 1954 के समय एक बोर्ड आफ ट्रस्टीज़ बनाया गया। आश्रमों की व्यवस्था और संगत के अन्य कार्यों को हाथ में लेने के अभिप्राय से। शुरू के बोर्ड के एक वर्तमान सदस्य श्री ओम कपूर संगत के सेवा कार्य में बड़े आगू रहे हैं। तपोभूमि आश्रम को उन्नत करने में (जहां हमारे एक स्वर्गीय बुजुर्ग प्रेमी ठाकुर यादराम सिंह जी निरन्तर बारह वर्ष तक रहते रहे) (श्री ओम जी का बड़ा हाथ रहा है। (कुछ समय श्री नरेन्द्र जिन्दल तपोभूमि प्रबन्ध

से सम्बन्धित थे) हमारे एक भिक्षु प्रेमी भाई रामजीदास जी ने हथनी कुण्ड (ताजे वाला) आश्रम को विकसित करने में काफी प्रयास किया है। शेष सभी आश्रमों की व्यवस्था और उन्नति के लिए स्थानीय संगतों के प्रेमी ध्यान, धन, और अमूल्य समय देते आ रहे हैं।

महाराज जी का कथन—“आश्रम इस गर्ज (उद्देश्य) से कायम हुए हैं और होंगे कि जिनमें संगत इकट्ठे होकर ख्यालात (विचारों) की एकता, कोशिश की एकता यानी बाहमी (परस्पर) मेल मिलाप और अपनी बेहतरी और कल्याण की खातिर सोचें। रिटायर शुदा (अवकाश प्राप्त) प्रेमी सज्जन दुनियावी कामों से फरागत (निवृत्ति) पा कर यानी वक्त निकाल कर तप की खातिर रह सकें।.....

### **भ्रमण, भक्ति और लोक सेवा**

जब तक मां जीवित रहीं, महाराज जी घर से दूर भ्रमण के लिये नहीं निकले। मां के निधन के पश्चात् जनता के कल्याणार्थ भ्रमण प्रारंभ किया। आप फ़रमाया करते थे—“यह चाहते हैं कि जो शान्ति और ठण्डक इन्हें मिली है, वह दूसरे जीवों को भी मिले।”

दिसम्बर, 1935 में आप लाहौर गए। वहां डाक्टर वीर राजा राम दत्त से भेंट हुई। उनकी श्रद्धा को देखकर आपने सत् वाणी प्रकट की और कुछ उपदेश दिए। जिनको डाक्टर साहेब ने लिखकर “पवित्र जीवन” नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर जन साधारण में बांटा।

लाहौर में अनेक जिज्ञासुओं से महाराज जी की भेंट हुई जिनमें मेहता अमोलक राम जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आप महाराज जी को अपने पैत्रिक शहर काला गुजरां (जिला जेहलम) ले गए। बाद में आपको महाराज जी के पास चिरकाल तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सरकारी नौकरी से निवृत्त होने के पश्चात् आपने जगाधरी आश्रम

के स्थापित और विकास में बहुत समय दिया। महाराज जी आपको प्यार से “बाबू” कहा करते थे। बाबू जी पढ़ने लिखने, प्रबन्ध कार्यों, हिसाब-किताब और कानून सम्बन्धी मामलों में विशेष दक्षता रखते थे।

महाराज जी ने जनता में सत् का प्रसार करने के लिए घर-बार को त्याग दिया और मार्च 1938 से विधिवत् भ्रमण करने का कार्यक्रम आरंभ किया और जीवन पर्यन्त अर्थात् जीवन के अन्तिम क्षणों तक इसी लोक सेवा में रत रहे। (आपने गुरु नगरी अमृतसर में 4 फरवरी, 1954 को नश्वर शरीर का त्याग किया)।

“जीवन गाथा” (उर्दू-हिन्दी) में भ्रमण के ब्यौरे-कहां कहां गये, किस-किस से मिले, क्या-क्या बातें हुई, वर्णित है। हिन्दी में एक और पुस्तक “मेरे गुरुदेव” हमारे प्रेमी भाई प्रो० सोम राज गुप्त की लिखी हुई महाराज जी के जीवन और उनकी शिक्षा पर प्रकाश डालती है। अंग्रेजी में “A MAN OF GOD” हमारे प्रेमी भाई हरबन्स लाल जी चावला ने लिखी है।

समता की शिक्षा के प्रचार हेतु महाराज जी ने एक उर्दू मासिक पत्रिका “समता दर्पण” प्रकाशित करने की आज्ञा दी। हमारे एक प्रेमी प्रो० रतन लाल जी भाटिया 1953 से ही इसका सम्पादन कर रहे हैं। सद्गुरुदेव जी की वाणी और वचनों के अलावा अन्य सन्तों, महात्माओं, फकीरों की वाणियां और धार्मिक पुस्तकों के संदर्भ इस पत्रिका में प्रकाशित होते हैं। बाद में “समता सन्देश” हिन्दी मासिक पत्रिका जारी की गई। इस पत्रिका के काम में श्री दौलत राय जी आगरा निवासी ने बहुमूल्य सेवा की है। अब श्री कृष्ण लाल शर्मा दिल्ली निवासी इसका सम्पादन कर रहे हैं।

हमारे एक बड़े परिश्रमी और कर्मठ प्रेमी श्री कर्म नारायण शर्मा का भी “समता दर्पण” से बड़ा सम्बन्ध रहा है। अब वह इसके सम्पादक हैं। वह अन्य पत्र-पत्रिकाओं में भी महाराज जी के जीवन और शिक्षा के

बारे में वर्षों से लेखन कार्य करते आ रहे हैं। हमारे एक बुजुर्ग प्रेमी श्री नरसिंह दास जी लौ समता साहित्य के भावार्थ के प्रकाशन में अग्रणी रहे हैं। अंग्रेजी में एक पुस्तिका "DIVINE SEED THOUGHTS" हमारे प्रेमी भाई परस राम जी हरयाल ने निकाली है जिसमें "ग्रन्थ श्री समता विलास" के वचनों का सारांश दिया है। आपने एक पुस्तक हिन्दी में "समता साधन सारांश" नाम से भी छपवाई है जिसमें 'ग्रन्थ श्री समता प्रकाश' और 'श्री समता विलास' में से चुने हुए शब्द और वचन सार रूप में विभिन्न शीर्षों के अन्तर्गत दिये गये हैं।

इस लघु पुस्तक में महाराज जी के सत् उपदेशों में से कुछ एक उदाहरण (प्रसंग) और चुनिन्दा प्रश्न-उत्तर इसमें में दर्ज किए गए हैं। साथ ही उनकी वाणी के हज़ारों शब्दों में से कुछ शब्द इस उद्देश्य से चुने हैं कि ग्रन्थ श्री समता प्रकाश के अध्ययन की रुचि और अधिक बढ़े।

आपके भ्रमणकाल के दौरान हज़ारों लोग बिना किसी धर्म और सम्प्रदाय के भेद-भाव के आपके उपदेशों से लाभान्वित हुए। सैकड़ों ने आपसे समता के ज्ञान और योग के गुप्त रहस्य की विद्या सीखी।

यहां केवल साधारण जानकारी के लिए उन स्थानों के नाम (क) जहां-जहां आप पधारे और (ख) उन विशेष स्थलों की चर्चा है, जहां पर आप ने तप की अवधि में गहन समाधि में प्रकट होने वाली अमृत वाणी उच्चारण फ़रमाई है।

### ( क ) पश्चिमी कश्मीर में

कोहाला, जल्मादा, चनारी, नखेतर पर्वत, शारियां (सरूपा जंगल) जंगल फैलां, डोमेल, मुजप्फराबाद। इसके अतिरिक्त जम्मू, श्रीनगर, मटन में भी गए।

## पश्चिमी पंजाब

लाहौर, जिला हज़ारा में सराय सालह, छज्जियां, हरिपुर, सरबगला, उस्मान खट्टर, गोलड़ा, ऐबटाबाद, जिला कैमबलपुर में थट्टा, पंजा साहेब, ज़िला रावलपिण्डी में रावलपिण्डी, मटोर, कहुटा, जण्ड मेहलू, हरनाल, कुरी, बम्याला, ज़िला ज़ेहलम में काला गुजरां, ज़िला गुजरात में कठाला तथा झंग मंघयाना, स्यालकोट के पास सुखो की मण्डी, मिलखांवाला।

## पूर्वी पंजाब

अमृतसर, तरणतारण, गुरदासपुर, काहनोवान, शाहपुर कण्डी, दोरांगला, पठानकोट, जालंधर, अबोहर, मलोट मंडी, होशियारपुर।

हिमाचल प्रदेश में शिमला, कांगड़ा, धर्मशाला, बैजनाथ, सम्याला। हरियाणा में जगाधरी, ताजेवाला, अम्बाला, होडल मण्डी, कुरूक्षेत्र। उत्तर प्रदेश में आगरा, देहरादून, केला घाट (राजपुर), बरेली, मन्सूरी (सिद्धखड्डु), हल्द्वानी। गुजरात काठियावाड में अहमदाबाद और मध्य प्रदेश में पचमढ़ी। इनके अतिरिक्त आप तीन बार दिल्ली भी पधारे।

(ख) तप तथा अमृत वाणी प्रकाश के मुख्य स्थान : लाहौर, अहमदाबाद, पचमढ़ी, नखेतर पर्वत, थट्टा, शाहपुर कण्डी।

भगत बनारसी दास जी भ्रमण आदि के प्रसंग में एक ऐसी महान हस्ती की चर्चा करना आवश्यक है जिन्हें 16 वर्ष तक श्री महाराज जी के चरणों में बैठने और सेवा का शुभ अवसर मिला। आप थे भगत बनारसी दास। इनकी पहली भेंट महाराज जी से मई, 1938 जल्मादा में तप के समय हुई। आप महाराज जी के शरीर त्यागने तक उनके साथ पूरे मनोयोग से सेवा में रहे। इस बीच महाराज जी जहां कहीं भी एकान्तवास के लिए, वनों, मैदानों, शमशानों या सुनसान स्थलों में जाते भगत जी

सदैव उनके साथ रहते थे। महाराज जी रात्रि दस-ग्यारह बजे से प्रातः छः सात बजे तक समाधिस्थ अवस्था में निरन्तर वाणी का उच्चारण करते और भगत जी उसको साथ-साथ लिखते जाते। अगले दिन आप उसको पढ़कर सद्गुरु जी को सुनाते। यदि कोई त्रुटि होती तो उसे ठीक करवा देते। भगत जी ने बाद में अमृत वाणी और प्रवचनों को एक जगह संगृहित करके दो ग्रन्थों “श्री समता प्रकाश” और श्री समता विलास” के रूप में स्वयं लेखनीबद्ध किया। पहली बैसाख सम्वत् 2005 तदनुसार 13 अप्रैल, 1948 के शुभ दिन सिद्ध खड्ड, मसूरी, के स्थान पर ग्रन्थ श्री समता प्रकाश की अन्तिम पृष्ठ पर सद्गुरुदेव जी ने अपने कर कमलों से “चेतावनी” लिख कर अपने हस्ताक्षर कर दिये और भगत जी को आशीर्वाद देते हुए कहा, “प्रेमी, इस ग्रन्थ ने तेरे हाथों से लिखा जाना था। भाग्यशाली जीवों को ऐसा मौका मिला करता है। इस सारे कारज को ईश्वर आज्ञा समझो। बनारसी, तुमने जो काम किया है, जब तक सूरज चांद रहेंगे, तेरा नाम रहेगा”।

सद्गुरुदेव के शरीर त्याग करने के बाद भी भगत बनारसी दास जी गुरुदेव के संदेश को स्थान-स्थान पर पहुंचाते रहे और 15 जनवरी 1987 प्रातःकाल करनाल में अपना शरीर छोड़ दिया।

महाराज जी के भ्रमण के दौरान अनेकों शिक्षाप्रद घटनाएं घटी। इनमें से कुछ एक का ही यहां वर्णन किया जाता है। मगर एक यथार्थता का दोहराना ज़रूरी है कि महाराज जी करामातों में विश्वास नहीं रखते थे। उनका कहना था कि “प्रेमी, हमारी ज़िन्दगी स्वयं एक करामात है। (हम लोग जिन्हें महाराज जी के चरणों में बैठने का सौभाग्य मिला, यह भी उस सन्त की एक बड़ी करामात देख कर हैरान होते थे कि उन्होंने किस तरह सांसारिक आवश्यकताओं और इच्छाओं पर ही नहीं, वरन् भूख, प्यास और निद्रा पर भी काबू पर लिया था। यद्यपि ब्रह्मलीन पूर्ण फकीर की ज़िन्दगी का यह एक छोटा सा पहलू था।)

## सहनशीलता

एक बार कोहाला की ओर जाते हुए रावलपिंडी से बस पर सवार हुए और फ्रंट सीट पर बैठ गए। आपके सादा कपड़ों को देख कर दूसरी कोई सवारी जो बाद में आती, आपको पिछली सीट पर जाने के लिए कहती। आप तत्काल सीट बदल लेते। करते-करते आप फ्रंट से काफी पीछे चले गए। एक सज्जन जो सब माजरा देख रहे थे, उनको यह बात अनयुक्त लगी। वह दूसरी सवारियों से झगड़ने लगे। इस पर आपने सहज भाव में कहा, “प्रेमी, आपको इनसे झगड़ने की कोई ज़रूरत (आवश्यकता) नहीं। इन्हें (स्वयं अपने आपको) तो लारी में बैठना है। कोई आगे पीछे की बात नहीं” इस उत्तर से प्रभावित होकर उस सज्जन ने आपको पास बिठा लिया।

## भोजन बंद

एक बार रावलपिण्डी में एक प्रेमी के घर आप खाना खाने गए। घर वालों ने एक थाल में कई प्रकार की सब्जियाँ रख कर खाना परोसा। आप देखकर हैरान हो गये और पूछा:- कि इसके बनाने में कितना वक्त लगा है। उत्तर मिला “दो-तीन घंटे”। यह सुनते ही आपके चेहरे पर उदासी के चिन्ह दिखाई देने लगे, मानो कह रहे हों-“जीवन की इतनी अनमोल घड़ियाँ एक फ़कीर का खाना बनाने में खर्च हो गई। जीवन में ये क्षण जो ईश्वर की याद में लगाने चाहिए थे, यूँ ही व्यर्थ हो गए। खैर, भविष्य में ऐसा नहीं होगा।” (तत्पश्चात् उन्होंने खाना बंद कर दिया) उस परोसे हुए खाने से दो टुकड़े लेकर शेष भोजन लौटा दिया।

## जड़ चेतन की पूजा

एक बार आपको रात्रि एक मन्दिर में बितानी पड़ी। शाम को मन्दिर के पुजारी ने आरती, आदि करके भगवान की पूजा की। इतने में दो यात्री मन्दिर में आ गए और उन्होंने पण्डित जी से रात्रि वहां गुज़ारने

की प्रार्थना की। उत्तर मिला—“यह तो भगवान का मन्दिर है, कोई सराय थोड़ी है, जो आपको यहां रहने की आज्ञा दी जाए”। वे लोग निराश होकर चले गए। बाद में आपने पण्डित जी से पूछा, “पण्डित जी, आप जड़ की पूजा करते हैं या चेतन की”? पुजारी ने जबाब दिया, “महाराज! चेतन की”। इस पर आपने कहा “पण्डित जी, जिस मूर्ति के आगे तुम खड़े हो, यह जो जड़ है”। पुजारी बोला, “हां महाराज”। आपने कहा, “जो दो अतिथि आये थे वे तो दोनों साक्षात् चेतन थे। तुमने उनको कैसे निराश कर दिया। जो चीज़ जीवित प्रत्यक्ष प्रमाण है, उसको मानते नहीं और जो चीज़ देखी नहीं, उसका सम्मान करते हो, यह कहां की दानाई है।”

### फ़कीर कभी बुरा नहीं चाहते

एक बार आप मटोर के क्षेत्र में एक पहाड़ी पर तप कर रहे थे। कुछ स्थानीय मुल्लाओं को यह बात बुरी लगी। उन्होंने आपकी हत्या करने का षड्यन्त्र रचा। तीन दिन तक निरन्तर हत्या के इरादे से रात्रि को आते रहे। मगर ऐसी-ऐसी डरावनी शक्तें उनको देखने को मिलीं कि वे स्वयं भयभीत होकर भाग जाते। हत्या करने में सफलता नहीं मिली। आखिर वे अपने गुनाह (पाप) बख़्शाने के लिए आपके पास आए और प्रार्थना की—

**मुल्ला जी**— स्वामी जी! हमारे गुनाह बख़्शा दें। हम बड़े गुनाहगार (पापी) हैं।

**महाराज जी**— प्रेमियों! आपने कोई गुनाह नहीं किया, जिसके लिए यह फ़कीर तुम्हें माफ़ी दें।

**मुल्ला जी**— स्वामी जी! हम तीन दिन लगातार आपको कत्ल करने के इरादे से आते रहे, मगर कामयाबी नहीं मिली।

**महाराज जी**— कोई बात नहीं प्रेमियों! फ़कीर (सन्तजन) किसी का बुरा नहीं चाहते।



## ऐसी चादर

एक बार किसी प्रेमी ने पार्सल भेजा। उसे खोलने पर उसमें से एक चादर निकली। आपने निम्नलिखित शब्दों में पत्र का उत्तर लिखा:-

ऐसी चादर दात करो, मैं ओढूं नगन शरीर।  
जनम-जनम का मिटे संदेशा, काल चक्र तकसीर॥  
जत का ताना, सत का पेटा, मति धीर जुलाहा बनावे।  
प्रेम की नाली से बुनत करीजे, मन पवन की खींच लगावे॥  
बुने अति अत गाढ़ा कपड़ा, वैराग की ठोक लगाई।  
नाम व्योपारी कपड़ा लेवे, नित बिरह का माप कराई॥  
कहन कथन विच आवे नाहीं, जो कपड़ा चमक दिखाई।  
तीन लोक में ढूंढत फिरी, कोई विरला मोल चुकाई॥  
हर जन साजन कपड़ा लेवे, त्रिबेनी घाट में धोवे।  
तीन ताप की मैल को हरे, नित सत यतन परोवे॥  
सत्गुर दरज़ी सीवे चादर, सुरत निरत दोउ पाट मिलाई।  
विवेक की सुई ध्यान का धागा, तप योग धारे कठिनाई॥  
निर्वाण शब्द की अखंड चादर, कोई गुरमुख साजन ओढ़े।  
“मंगत” तिस के चरण कंवल में, नित-नित प्रीती जोड़े॥

पत्र लिखवाने के बाद आपने वह चादर भगत बनारसी दास को दे दी और आज्ञा दी कि प्रेमी को लिख दो कि आइन्दा (भविष्य में) इस तरह पार्सल न किया करे। भेंट हाज़र होकर ही करनी चाहिए।

## सारी दुनिया तकिया

एक बार श्री महाराज जी काला गुजरां में विराजमान थे, तो शहर से बाहर कुछ दूरी पर बन्नी बावियां एक एकान्त स्थान पर छायादार पेड़ों के नीचे समय व्यतीत किया करते थे। एक दिन वहां बैठे थे तो चौधरी

करीमदाद नम्बरदार आपके चरणों में हाज़िर होकर अभिवादन कर निकट बैठ गये और प्रार्थना की:-

“पीर जी, यह सेवक आपके हर रोज़ दीदार (दर्शन) करता है। जिस ज़मीन में रात को आप बैठते हैं, वह इसी खादम (दास) की है। आप हुक्म दें तो इसमें बीघा दो बीघा ज़मीन में आपके बैठने के लिए तकिया बना देवें और वहीं ठहरा करें। श्री महाराज जी बोले:- “प्रेमी तेरी बड़ी मेहरबानी है जो तूने ऐसी पेशकश की है। प्रभु तुम्हें यकीने पाक (सत् विश्वास) दें जो कि इस कद्र नेक ख्याल फ़कीरों के लिए बनाया है। फ़कीर तकियों के हक़ में नहीं हैं। सारी दुनिया ही इनका तकिया है। फ़कीर एक जगह बना कर बैठा नहीं करते। न किसी जगह की पाबन्दी में आने वाले हैं। हिन्दू मुसलमान सब इनके लिए एक जैसे हैं। किसी को किसी फ़र्क़ (भेद-भाव) की निगाह से नहीं देखते। ज़ाते-आला (ईश्वर) सब में एकसां (एक समान) है, गो (यद्यपि) जिस्म सबके खाकी हैं। सबको दिल की राहत की ज़रूरत है। वह क़ल्बी सकून (मन की शान्ति) फ़कीरों के पास बैठने से मिलता है।.....”

### प्रभु की कृपा

एक बार सरूपा जंगल (कश्मीर) में सतह समुद्र से लगभग आठ हजार फुट की ऊंचाई पर एकान्तवास कर रहे थे। एक दिन एक बुज़ुर्ग मुसलमान भाई दूध लेकर आया। प्रसाद सेवा में रखकर सलाम किया और निकट ही बैठ गया।

वार्तालाप इस प्रकार हुआ।

गुरूदेव - बाबा, किधर से आया है?

बाबा - साईं जी, आज सपने में पता लगा कि इधर कोई फ़कीर आया हुआ है। दिल ने कहा सलाम के लिए जाओ। सुबह उठकर पता किया तो मालूम हुआ कि चौधरी फ़कीर चन्द

(महाराज जी के शिष्य) के गुरु इस जंगल में आए हुए हैं, बड़े रब्ब के बन्दे हैं। फिर सुबह-सुबह घर से चल पड़ा (उस का घर इस जंगल से 12 मील की दूरी पर था)।

गुरुदेव - बाबा! लड़के कितने हैं?

बाबा - अल्लाह की दौलत दो हैं। और सब प्रभु कृपा है।

गुरुदेव - रास्ते में जंगल था, डर नहीं लगा?

बाबा - पीर जी! बन्दे के साया (परछाई) से सब चीज़ें डरती हैं। अगर बन्दे के अन्दर ज़रा खौफ (भय) हो तो। जब इसके अपने कर्म ही दूसरे को नुक़सान (हानि) पहुंचाने वाले होते हैं, तब दूसरी चीज़ इस पर हमला (आक्रमण) करती है। बाकी हर माल जंगली जानवर अपने-अपने उसूल में हैं। बन्दा (मनुष्य) ही वेअसूली कर जाता है। बन्दा ही नेक (शुभ) व बद (अशुभ) अपना स्वभाव बना लेता है, गो (यद्यपि) अशरफ़उल-मखलूकात (सर्वश्रेष्ठ प्राणी) है। सब समझ रखता है।

गुरुदेव - बाबा, तुम बड़े अच्छे फकीर ऋषि हो। जंगलों में रहते हो, खुदा की याद करते हो और उसकी रज़ा (मर्जी) में वक्त निकाल रहे हो। अपने कर्म की सज़ा-ज़ज़ा हर रूह (प्राणी) पा रही है। अच्छे कर्म से अच्छी आदत बनती है, खराब कर्म से खराब। खुदा सबको नेक समझ, नेक फेल (कर्म) बख़्शो!

बाबा - पीर जी, दुआ करो, खुदा ईमान और सबर बख़्शो।

गुरुदेव - खुदा हर एक पर मेहर करने वाला है यकीन रखो।

**सत्गुरु लक्षण-** भगत बनारसी दास शुरू में महाराज जी से मिलने पर जब उनके चरणों में रहने का आग्रह कर रहे थे, तो थोड़ी देर में क्या देखते हैं कि आंखें बन्द किये ही सत्गुरु वाणी का उच्चारण कर

रहे हैं। उसे श्रवण करके प्रेम-द्रवित हो गये ओर फट से नोट-बुक निकाल कर लिखने लगे। वाणी की समाप्ति पर गुरुदेव ने आंखें खोलीं और भगत जी को लिखता देख कर कहने लगे, “क्यों लिख रहे हो? यह बातें घर-घाट का नहीं रहने देतीं!” भगत जी बोले, “महाराज जी, कुछ पता नहीं लगता! आप के चरणों में बैठकर कुछ इस कदर शांति प्राप्त होती है और ऐसा प्रेम अन्दर उठ रहा है जो इस बात पर मजबूर कर रहा है कि हर वक्त आपकी सेवा में रहकर यह वचन लिखता रहूं।

गुरुदेव ने कहा-“फकीरों के पास रहना बड़ा ही मुश्किल है! उनके फरमाने पर कि अब जो लिखा है, पढ़ कर सुनाओ। भगत जी ने पढ़ना शुरू किया! उनमें से चन्द शब्द यह हैं:

‘जप तप संयम साधना, मोह माया से उदास।  
पर उपकारी विरत जां, शब्द अलख चित्त वास॥  
तन मन की शोभा तजे, रहे आतम में परवीन।  
बानी निरपख बोलदे, एह सतगुर लक्षण चीन॥  
सब जीवों में एक दृष्ट, प्रेम समता ज्ञान।  
वरण कुल नहीं मानदे, केवल सत ध्यान॥’

## 2. समता-महत्व और उपदेश

“समता विलास से”

- समता का असली अर्थ यह है कि हर हालत में एक रस होना। ग्रहण और त्याग की कामना से मुक्ति हासिल करनी।
- समता का असली रस इन्द्रियों के भोगों से विरक्त होने से मिलता है।
- समता शक्ति अनुभव करके कुल महापुरुषों ने निजात (मुक्ति) हासिल की और लोगों को राहते अब्दी (शाश्वत शान्ति) सिखलाई।
- समता का ज़हूर (प्रकट स्वरूप) कुल दुनिया है। सब पदार्थ एक दूसरे के प्रेम से खड़े हैं।
- समता शक्ति से कुल दुनिया का निज़ाम (शासन) खड़ा है।
- समता तत्त के पूर्ण मानी (अर्थ) हैं एकता (EQUALITY) मुसावात यानी एक भाव की तहकीक़ात (खोज) करना। ममता रूपी विकार जो कि पल-पल में ख्यालात (विचारों) को भरमाता है। बग़ैर समता तत्त के समझने के कभी नाश नहीं होता।
- समता के आधार पर कुल दुनिया की राजनीति और धर्म नीति बनी है। जो समता के बग़ैर नीति होती है, वह दुःखदाई है और जल्दी नाश हो जाती है।
- समता की हिदायत सबको निज़ात देने वाली है, सब मज़हबी झगड़ों और दुनिया के झगड़ों से।
- समता की हिदायत करने वाला ही असली रहनुमा है। इसके बग़ैर जो उपदेश है, वह बादमुबाद (वाद-विवाद) है।

- समता ज्ञान कोई फिरका (सम्प्रदाय) या मज़हब नहीं है, बल्कि हर एक मज़हब की बुनियादी रोशनी है।
- समता ज्ञान फिरका प्रस्ती (साम्प्रदायिकता)। मुल्क प्रस्ती (राष्ट्रीयता) कुल ज्ञात प्रस्ती से बालातर (ऊपर) है। फिरका प्रस्ती में भी खुदगर्जी (स्वार्थ) है। मुल्क प्रस्ती में भी ममता है। कुल ज्ञात का अभिमान भी कैद है।
- समता ज्ञान शरीर अभिमान और कर्म अभिमान के छोड़ने से प्राप्त होता है।
- समता ज्ञान शुद्ध उपासना से, यानी ईश्वर को कर्ता-हरता समझ कर स्मरण करने से हासिल होता है।
- स्वार्थ बुद्धि यानी खुदगर्जी हर वक्त जीव को बन्धन दर बन्धन में डालती है। वस्तु प्राप्त होने पर भी और वंजोग होने पर भी, कभी शान्ति को हासिल नहीं कर सकता। जब समता ज्ञान यानी एक भाव को विचार करता है, तब उसके अन्दर निष्काम कर्म आदि श्रेष्ठ गुण प्राप्त होते हैं।
- समता मार्ग में आत्म निश्चय और लोक सेवा मुख्य साधन है।
- समता मार्ग में हर नेक काम के शुरू में ईश्वर की उस्तत करना लाज़मी (अनिवार्य) है और किसी चीज़ का आधारी होना मना है।
- समता मार्ग में दुनियावी रस्मों रिवाज़ को बिल्कुल साधारण करना और तमाम तोहमात का त्याग लाज़मी है। समता की तालीम (शिक्षा) आम हिन्दू सम्प्रदाय और दीगर मज़हब में इस तरह है जिस तरह माला के मनकों में धागा।
- समता की तालीम तमाम इखलाकी बुज़ुर्गों के जीवन आदर्श का विचार सुनना और उस पर कारबन्द होना सिखलाती है।
- समता की तालीम सही कानूने कुदरत का मुतालया (अध्ययन)

करने में और अपने को कुदरती जिन्दगी बनाने के वास्ते हिदायत करती है।

### समतावादः

समता में यकीन (विश्वास) रखने वाले सभी प्रेमियों के लिए श्री सत्गुरुदेव ने निम्नलिखित उपदेश दिये हैं:-

1. समतावादी सज्जन ईश्वर के सत नियमों का पालन करना अधिक ज़रूरी फर्ज़ जानकर हर एक मज़हब वाले से निर्वैर होकर बर्ताव करना ही अपना मुख्य धर्म जाने और अपने आपको ईश्वर आज्ञा में निश्चित करके समभाव में स्थित होना ही परम साधन समझे।

2. जिस-जिस मज़हब, पंथ में जो समतावादी सज्जन होवे उसको अपना जीवन निर्विकार बनाना और दूसरों की कल्याण चाहनी अपना मुख्य उद्देश्य जाने।

3. भिन्न-भिन्न मज़हबी व (तथा) मुल्की रस्मों रिवाज़ के तंग दायरों से अपने आपको आज़ाद करके उनके बादमुबाद से मुख्लसी हासिल करे और निष्काम भाव से सत्कर्मों में अपने आपको दृढ़ करें।

4. समभाव ही कल्याण है। समभाव ही जीव का वास्तविक स्वरूप है परम धाम है। समभाव ही धर्म है। समभाव की प्राप्ति में यत्न करना ही गुरुमुख मार्ग है। इस वास्ते अपने आपको मज़हबी खुदगर्ज़ी (स्वार्थ) से आज़ाद करके सत् असूलों में पाबन्द होने का सत् साधन धारण करे और हर घड़ी, हर लम्हा (क्षण) अपने आप पर काबू पाने की कोशिश करे। इसी में असली शान्ति है। - (ग्रन्थ श्री समता विलास)

### विशालता और पवित्रता

महात्मा श्री मंगत राम जी ने “संगत समतावाद” की बुनियाद रखी। साथ ही उनका नज़रिया (दृष्टिकोण) था कि संसार के सभी प्राणियों को संगत समतावाद ही जानें। आपका कथन है कि “समता की तालीम मुकम्मल (सम्पूर्ण) हो चुकी है और कुछ लिखने-लिखाने की

जरूरत नहीं रही, जैसा कि ईश्वर आज्ञा हुई है। अब सिर्फ सेवादार भिक्षुओं की जरूरत है, जो सदाचारी, परोपकारी, पूर्ण त्यागी और समय का बलिदान करने वाले हों और हर समझ नहीं आई में समता के उसूलों का प्रचार करें। अपने उच्च जीवन यानी असली जिन्दगी से और जीवों पर असर-अंदाज़ (प्रभावशाली) हों। पांच मुख्य नियमों सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग और सत् सिमरण पर खुद आमिल हों और दूसरों को चलावें। नुक्ताचीनी या दूसरों की ऐबजोई (छिद्रान्वेषण) की भावना करने का किसी को कोई हक नहीं है। संगत के तमाम प्रेमी अपनी जरूरतों को काफी कम करके दूसरों की उन्नति की खातिर अपना तन मन धन निष्काम भाव से अर्पण करें। मुस्ताहक (अधिकारी) की इमदाद (सहायता), तालीम पर खर्च, बेकारी हटाने में सहायता, ऐसे-ऐसे शुभ काम को ही ईश्वर भक्ति और गुरु भक्ति समझें।

आप यह भी समझाते हैं—“जो एक ईश्वर को सब में नहीं देखता, वह ईश्वर हस्ती से मुनकर (नास्तिक) है। जो प्रेम करके दुःखी जीवों की सेवा नहीं करता, वह ईश्वर हुक्म से मुनकर है। जब माया का अभिमान प्रचण्ड होता है, तब खुदगर्जी और खुदपसन्दी में गिरफ़तार होकर अपनी इख़लाकी जिन्दगी (सदाचारी जीवन) को नाश कर देता है। ख़्वहिश और गज़ब के अज़ाब (वासना और हिंसा) में फंस कर दीन-दुनिया से हाथ धो बैठता है। यह ही हालत जीव को घोर नर्क दिखलाती है।”

“खुद यानी अंहकार से निज़ात हासिल करें समता के विचार से। यह बड़ा आसान मार्ग महापुरुषों ने बतलाया है।”

“समता के बग़ैर इख़लाकी और रूहानी तरक्की नहीं हो सकती और यह समता भाव आज से कुरा हवाई (सारी सृष्टि) में फैल गया है। आहिस्ता-आहिस्ता पवित्र अन्तःकरण वालों के हृदय में असर करेगा। समता के आधार पर ही देश और दुनिया की तरक्की कर सकेंगे और कोई रास्ता नहीं आता” (महाराज जी ने मई, 1940 में लिखा)।



### 3. असली खुशी-शाशवत शान्ति

“असल खुशी जो हमेशा दायम-कायम (स्थिर) रहने वाली है और तमाम ज़रूरतों से बालातर (ऊपर) है, वह आत्मशक्ति यानी संसार की जो ज़िन्दगी है, हर एक क़ालब (शरीर) के अन्दर चमक रही है। ज़र्ज़-ज़र्ज़ (कण-कण) उसकी ताकत से खड़ा है। इसी को मरकज़ या मसदर (केन्द्र-बिन्दु), ईश्वर शक्ति कहा गया है। इसी ताकत को हासिल करने से इस दुनिया के गहरे अज़ाब (महान दुःख) से जीव शान्त होता है।”

“अन्दर तो सब के वह ताक़त मौजूद है। मगर जीव उसको पहचान नहीं सकता क्योंकि अपनी ख़्वाहिशों की गिरफ़्तारी इसको इधर-उधर भरमाती रहती है। जिस वक्त अपनी ख़्वाहिशों पर काबू पा लेता है, उस वक्त अन्दर सत् आनन्द को प्राप्त कर लेता है। फिर तमाम कैदों से रिहाई पा जाता है। इस हालत को परम धाम या मेराज़ कहा गया है। सबका आखिरी अंजाम (अन्तिम लक्ष्य) वह ही जगह है यानी अपना सत् स्वरूप जो हमेशा की खुशी और पूर्ण है। हर एक मानुष को इसकी तलाश करनी चाहिए। वह ही इस ज़िन्दगी का फल है। अगर उसको हासिल नहीं किया तो अन्त को निराश ही दुनिया से चला जायेगा।”

“सब मज़हबों के रहनुमाओं (पथ-प्रदर्शकों) का यह ही मक़सद (उद्देश्य) था कि जीव नाशवान संसार में आकर असली खुशी को हासिल कर लेवे। मगर उनके पीछे जो चलने वाले हुए, उन्होंने सिर्फ़ वाद-विवाद को हासिल करना ही सीखा, जिसका नतीजा यह हुआ कि दुनिया में अशान्ति अधिक हो गई। किसी ही नेक आदमी को उनकी असलियत का पता लगा कि जिस तरह उन बुजुर्गों ने नेक ऐमाल (शुभ कर्म) धारण करके राहते-अब्दी (शाशवत शान्ति) हासिल की, उसी

तरह मुझ को भी कोशिश करके रास्ती (सच्चाई) की तलाश करनी चाहिए। वह ही इन्सान असली मक़सद को जानने वाला है। इसके बग़ैर सब ज़हालत और खुदगर्ज़ी का मुकाम है। असलियत की तहकीकात करना सबका फ़र्ज है। महज़ बुजुर्गों की बुजुर्गी से निज़ात नहीं मिलती, जब तक कि अपने अन्दर नेक उसूल न धारण किये जाएं।”

“जीव शरीर की कैद में आकर पन्थ और मज़हब का अभिमानी हो जाता है। दरअसल (वास्तव में) जीव का कोई मज़हब नहीं। जीव को बन्धन सिर्फ़ अपनी कल्पना का ही है। कल्पना को ही माया या भ्रम कहते हैं। निर्बन्ध अवस्था में असली खुशी और आनन्द है। इसी तत्व को “समता” कहते हैं। यानी हर हालत में पूर्ण। तमाम संसार की वही जगह मरकज़ (केन्द्र) है और जीव की आनन्दमयी हालत भी वही है और सत्पुरुषों की सार प्राप्ति भी वही है। “तमाम दुनिया का फ़ल्सफ़ा और तहकीकात (दर्शन और खोज) आखिर जीव को शान्ति की तलाश दिखलाता है। जिसने अपनी ज़िन्दगी को पवित्र नहीं किया, सत् विचारों को धारण करके, वह महज़ पशु ही जाने। तमाम महात्माओं की तहकीकात यही है कि ज़िन्दगी के होते हुए असली खुशी समता को हासिल कर लेवें जिससे जीव का सब अज़ाब (दुःख) दूर हो जावे।”

“असली खुशी का मम्बा (स्रोत) जीव के अन्दर है। मगर बग़ैर अंतःकरण की शुद्धि के कोई हासिल नहीं कर सकता। अपनी गुमराह और मुनकर अक्ल (भटकी हुई नास्तिक बुद्धि) को उस मालिक की तरफ रजू (प्रवृत्त) किये बग़ैर कभी भी असली खुशी नहीं मिलती है। यह दुनिया एक गहरा हजाब (पर्दा) है। रोशन ज़मीरी से ही समझ में आ सकता है, नहीं तो हजाब को ही खुशी मानकर हर वक्त जीव परेशान रहता है। किसी हालत में भी असली शान्ति को प्राप्त नहीं हो सकता।”

“जिस पन्थ या मज़हब में जो है वह अपनी ज़िन्दगी को सही उसूलों पर ले जाकर राहते-अब्दी हासिल करे। यह असली कोशिश उस मज़हब की और उसके पेशवाओं (प्रवर्तकों) की हिदायत उसको हो रही है।

“जिसने सही कोशिश करके अपनी ग़फलत (अज्ञानता) का इलाज नहीं किया, वह किसी मज़हब को अख्तयार करने से कभी खुशी हासिल नहीं कर सकेगा। तमाम मज़हब और पन्थ यह ही बतलाते हैं कि इस फ़नाह होने वाली दुनिया (नश्वर संसार) में आकर लाफ़ानी हस्ती (अनश्वर शक्ति) की तहकीकात करो जो असली खुशी है और रंज व ग़म से बालातर (ऊपर) है। अपनी ज़िन्दगी को हर वक्त साबर व साकन (धीरजवान और नेहचल) हालत की तरफ़ राग़ब (प्रवृत्त) करना ही असली धर्म है और तमाम बुजुर्गों का जीवन यह ही है। हर एक मनुष्य को चाहिए कि ख़्वाबे ग़फलत (अज्ञानता के सपन) से मुख़्तसी (मुक्ति) हासिल करे और समता धर्म में अपने आपको वक्फ़ (समर्पित) करके समता आनन्द को प्राप्त करे, जो इस जीव का असली मुक़ाम है। हर वक्त सही कोशिश अख्तयार करना ही असली खुशी के देने वाला है।

“मनुष्य का जन्म असली खुशी को हासिल करने की खातिर हुआ है, जो समता का पूर्ण रूप है। इसलिए हर घड़ी अपनी मूर्खताई को छोड़कर सत्स्वरूप आत्मा का विश्वासी और अभ्यासी होना चाहिए। दुःख सुख ईश्वर की आज्ञा में जान कर धीरजवान रहना चाहिए। यह ही असली कल्याण का मार्ग है।”

“ज़िन्दगी को ज़िन्दा करना चाहिए। असली खुशी की तलाश करनी चाहिए। बेज़ारी से छूटने की कोशिश करनी चाहिए। असलियत की तहकीकात (खोज) करनी चाहिए। अपनी ज़िन्दगी को खुशबूदार बनाना चाहिए। प्राणों के होते होते निर्भय अविनाशी अवस्था को प्राप्त कर लेना चाहिए।

(ग्रन्थ श्री समता विलास से)

## 4. आध्यात्मिक उन्नति के मुख्य साधन

महाराज जी ने आत्मिक उन्नति के पांच मुख्य साधन बतलाये हैं:

### सादगी

इस साधन को धारण करने से मनुष्य बहुत गैर-ज़रूरी ख़्वाहिशात (अनावश्यक कामनाओं) का काबू पा जाता है। लिबास, खुराक और विचार को सादा करने का नाम सादगी है। लिबास सादा से प्रेम बढ़ता है, आज़जी (नम्रता) आती है। अदब (सभ्यता) हासिल होता है और थोड़ी आमदनी में गुज़ारा हो सकता है। ज़रूरतों की ज़्यादाती पाप करने की तरफ़ राग़ब करती है। बड़ी से बड़ी कोशिश करके सादगी के जीवन को अख़्तियार करना चाहिए। असली खुशी का राज़ (रहस्य) इसी में है।

खुराक सादा खाने से सेहत अच्छी बनती है। बुद्धि निर्मल होती है और मन की वासना पर काबू पाने की शाक्ति प्रकट होती है।

विचार की सादगी यह है कि हर एक से निष्कपट होकर विचार करना। दिल में बुज़ (द्वेष) न रखना। साधारण गुफ़्तगू (वार्तालाप) करनी जिसमें पख़वाद (पक्षपात) न होवे। सादगी का नियम असली ज़िन्दगी की बुनियाद है। इस वास्ते अगर कोई अपने गुनाहों से मुख़्लसी (पाप-निवृत्ति) चाहे या राहते-अब्दी (सत् शान्ति) की तलाश करें तो पहले सादगी को दृढ़ विश्वास करके धारण करे।

### सत्य

सत्य के मानी (अर्थ) ये हैं कि जो चीज़ हमेशा दायम कायम (स्थिर) है, उसकी तलाश करने की कोशिश करनी और उसके मुताबिक (अनुसार) अपने जीवन को बनाना। हर एक बात का सही

विचार करना, हर एक बात को सही अमल में लाना। अपना बोल-तोल हर पहलू में सच्चा रखना। जो बात दिल में होवे, ज़बान से कहनी। यह सत् का स्वरूप है।

सत् एक ईश्वर है। बड़ी से बड़ी कोशिश करके सत् विश्वासी होना चाहिए। जब तक अपनी अक्ल पापों की गिरफ्तारी में है, तब तक कभी भी सत् के स्वरूप को अनुभव नहीं कर सकता।

जिसने दुनिया को नापायदार (नश्वर) जाना है यकीन करके, और अपनी गफलत को छोड़ने की कोशिश हर वक्त करता है, वह ही सत् का मुतलाशी (जिज्ञासु) है। एक दिन वह असली खुशी को हासिल कर लेवेगा।

सत् की तलाश किसी खास मज़हब की पाबन्द नहीं है। सत् का सबक (पाठ) अन्दर से कुदरत (प्रकृति) दे रही है। मगर ज़हालत से पता नहीं लगता।

हर वक्त अपनी ज़मीर (अन्तर आत्मा) को सच्चाई में राग़ब रखना चाहिए। किसी भी वक्त असत् भावना न पैदा होने दें। तब सत् का असली जज़बा मिलता है।

## सेवा

निष्काम सेवा मनुष्य ज़िन्दगी का मेराज़ (सर्वोच्च लक्ष्य) है। जिस तरह से पवन, पानी, धरती, सूरज और चन्द्रमा अपने फर्ज़ को मानकर हर वक्त सेवा में मसरूफ़ (व्यस्त) रहते हैं, उसी तरह से मनुष्य को भी लाज़म (अनिवार्य) है कि अपना फर्ज़ जानकर हर वक्त दूसरे की सेवा करे। तब ईश्वर के हुक्म को मानने वाला हुआ।

अपने धन को यथार्थ अधिकारी की सेवा में अर्पण करना चाहिए। अपने तन को दुःखी दीन अनाथ और लोक सेवा में लगाना चाहिए। अपने मन को काबू करके ईश्वर के चरणों में जोड़ना चाहिए।

सेवादार के अन्दर अधिक गुण प्रगट होते हैं, यानी प्रेम, एकता, निर्मानता, त्याग, वैराग्य, शील, सन्तोष आदि।

जो भी खुलासी चाहे या सच्चे धर्म ईमान का मुतलाशी (जिज्ञासु) होवे, वह सेवा मार्ग को धारण करे। सब सुखों की सार और बुजुर्गों का जीवन सेवा ही है।

सेवा का पूर्ण स्वरूप यह है कि अपना फर्ज करके दुखियों का दुःख निवारण करे। मन में कामना बिल्कुल न रखे और यह विचार दृढ़ करे कि किसी का भला हो जावे तो बेहतर है। इस दुनिया से एक दिन चलना ज़रूर है।

## सत्संग

सत्संग का पहला उसूल इकट्ठा मिल कर बैठना । दूसरा अपनी बेहतरी के ज़रिए (साधन) विचार करना। तीसरे असली धर्म का विचार सुनना। तमाम बुजुर्गों की ज़िन्दगी के हालात से वाक्फ़ी (जानकारी) हासिल करना। चौथे इस संसार में आने का यथार्थ लाभ विचार करना। पांचवें हर एक विघ्न निवारण करने का भाव पहचानना और सत् धर्म में जागृति हासिल करनी। छठे, अन्ध-विश्वास से निजात हासिल करनी और सातवें अपनी गिरावट के कारण को विचार करना और दिखावे से मुख्लसी हासिल करनी और भी कोटा कोट फायदे हैं।

हर एक मज़हब के राहनुमा की इज़्ज़त करनी और उनके शुभ जीवन का आदर्श धारण करना और अपनी आत्मिक उन्नति करनी, यह समता का सत्संग है।

ज़हालत, तुअस्सब, (धर्माधता) बादमुबाद, (वाद-विवाद), खुदग़र्ज़ी, सब सत्संग में आने से खत्म हो सकते हैं।

## सत् सिमरण

सब इबादत, रयाज़त (तपस्या) भक्ति, योग, सत् सिमरण ही है। कर्म में निहःकर्मता सत् सिमरण से ही है।

सत् सिमरण जो मन से किया जावे, वह श्रेष्ठ है। ज़बान से जाप करने से या बुलन्द आवाज़ करके जाप करने से नाम का असर उड़ जाता है। ईश्वर को मालिक जानकर जो प्रेम से सिमरण करता है, वह ही सिमरण योग को प्राप्त होता है। जिसे याद करता है, उससे मिल जाता है। ईश्वर के नाम की अपार वडियाई है। जिसको प्राप्त हुई, वही जान सकता है। जबान ब्यान नहीं कर सकती और कलम तहरीर (लिखना) नहीं कर सकती। अति ही आश्चर्य का मुकाम है। अपने अम्ल (क्रियात्मक जीवन) करके ही हासिल हो सकता है.....

आत्मिक उन्नति के पांच मुख्य साधनों पर 'ग्रन्थ श्री समता विलास' में प्रकाशित वचनों में से कुछ एक वाक्य अभी हमने पढ़े। इसी ग्रन्थ में दूसरे स्थान पर श्री महाराज जी ने पांच समता सत् नियमों की चर्चा की है, जो संक्षेप में इस प्रकार है:

(1) **सत्संग**- सत्संग का रोज़ाना धारण करना अधिक सुखदाई है क्योंकि विवेक इससे प्राप्त होता है और विवेक के बल से अपने पापों से निवृत्ति सहज ही हो जाती है। सत्संग शुद्ध रीति से होना चाहिए, यानी निर्विषाद और निर्मान भाव जिन विचारों से प्राप्त होवे, वही सत्संग निर्मल है।

(2) **अभ्यास**-समता आनन्द प्राप्ति की खातिर अभ्यास अधिक ज़रूरी है। अभ्यास में वक्त की पाबन्दी और अधिक दृढ़ता होनी चाहिए। यानी रोटी (भोजन) खाने से भी अभ्यास को लाज़मी (अनिवार्य) समझना चाहिए।

(3) **सेवा**-निष्काम भाव से अपनी कमाई का दसवन्द (दसवां हिस्सा) धर्म मार्ग में खर्च ज़रूरी करना चाहिए। अगर कुछ ज़्यादा बचत होवे तो पांचवां हिस्सा तक भी।

(4) **व्रत**- हफ़्ता (सप्ताह) में एक व्रत रखना चाहिए। अगर इतनी कुर्बानी न हो सके तो माहवारी एक व्रत रखना चाहिए।

(5) **तप**-अगर किसी को ज्यादा फ़राग़त (अवकाश) संसारी कामों से प्राप्त हो जावे तो उसको कुछ-कुछ वक्त तप में भी रहना चाहिए। यानी एकान्त सेवन, थोड़ा बोलना, थोड़ा खाना और ज़्यादा अभ्यास करना चाहिए, यानी अपनी आत्मिक उन्नति की खातिर अधिक दृढ़ता धारण करनी चाहिए। पहले अपनी आदत के मुताबिक घण्टों की आज़ादी, फिर दिनों की और हफ़्तों तक एकान्त सेवन करके आत्मानन्द को प्राप्त करना चाहिए। सही आत्मिक उन्नति ज़िन्दगी का एक बड़ा अहम (महत्वपूर्ण) पहलू है। मगर आम ज़िन्दगी से सम्बन्धित कुछ और भी बिन्दु हैं जिन पर श्री महाराज जी ने प्रकाश डाला है। इनका सही विचार आध्यात्मिक उन्नति में भी सहायक सिद्ध हो सकता है:

## तीर्थ

तीर्थों पर जाने से.....गुज़रता ज़माने (प्राचीन काल) और गुज़रे हुए बुजुर्गों के जीवन से कुछ शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। सबसे बड़ा तीर्थ आत्म स्वरूप है जो घट-घट व्याप रहा है। उसके जानने से सब जलन नाश हो जाती है। मूल तीर्थ ईश्वर विश्वास है। मां, बाप, बुजुर्गों और हमसाया (पड़ोसी) को प्रेम करके सेवा करनी बड़ी तीर्थ यात्रा है।

**दान**-फ़र्ज करके यथाशक्ति सेवा करनी। सबसे बड़ा दान निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए खर्च करना है:

- शिक्षा का प्रसार।
- बीमारी का इलाज और रोकथाम।
- खाना और कपड़ा हर ज़रूरतमन्द के लिए।
- अच्छे इख़लाक के खुदाप्रस्तों और उल्लमा (सदाचारी भक्तों और विद्वानों) की सरप्रस्ती (संरक्षण)।



- ग़रीबों और यतीमों (अनाथों) की मदद और उनकी तरक्की।
- रफाए आमां (लोककल्याण) के काम आदि।

**बुत प्रस्ती ( मूर्ति पूजा )-** “बुत प्रस्ती से वाहदत प्रस्ती (एक ईश्वर पूजा) की तरफ मन को ले जाना चाहिए।” “सत्पुरुषों का ज्ञान स्वरूप जो उनका सच्चा जीवन था, वह पूजने योग्य है।”

“जिस भी बुजुर्ग का चित्त में विश्वास होवे, उस बुजुर्ग के अन्तरज्ञान को धारण करना उसकी असली पूजा है।”

**ग़लत ( अनयुक्त ) पूजा-** “अनेक प्रकार की भावना रखकर अनेक देवी-देवताओं की पूजा करनी सख्त ज़हालत ( भारी मूर्खता ) है विकार को देने वाली है।”

- कर्म चक्र से जीवन को सज़ा और जज़ा मिलती है, देवी देवता क्या कर सकते हैं? इस वास्ते उनकी पूजा भी गिरफ्तारी है, अधीरता और भ्रम को बढ़ाने वाली है।
- देवी देवताओं की पूजा ईश्वरीय विश्वास और सत् पुरुषार्थ को नाश करने वाली है।
- ईश्वर की भक्ति से सब देवी-देवता अधीन हो जाते हैं।

**भूत-प्रेत-** ‘इनका कोई स्वरूप नहीं। सिर्फ मन का वहम है। फर्ज़ किया (मान लो कि) स्वरूप अगर हो तो भी जीव की अपनी कल्पना अनुसार है।’

हर वक्त एक ईश्वर का विश्वास रखना चाहिए। अपने कर्मों को श्रेष्ठ करना चाहिए। ईश्वर के नाम पर दान देना चाहिए। भूत-प्रेत वगैरह की कल्पना से दूर रहना चाहिए।

**दुनियावी रिवाज़-** शादी मौत की रीति बिल्कुल सादा तरीके से अम्ल में लानी चाहिए।

**नुमायशी ज़िन्दगी-** का बिल्कुल त्याग करना चाहिए। बड़ी से बड़ी कोशिश करके सादगी के जीवन को अख्तियार ( धारण ) करना चाहिए। असली खुशी का राज़ इसी में है।

**वक्त की पाबन्दी ( समय पाबन्द )-** समय की पाबन्दी को बिल्कुल ज़रूरी समझ कर हर एक दुनियावी कार्य और परमार्थिक कार्य समय पर करना चाहिए, यानी सोना, जागना, खाना, पीना, सत्संग, दान तप, भजन बग़ैरह ( आदि ) समय के अनुसार होने चाहिए।

**नियम से पतित होने पर-**श्री समता विलास में आत्मिक व सामाजिक उन्नति के निर्मल नियमों के तहत एक वचन में महाराज जी फरमाते हैं:-

‘अगर कोई प्रेमी किसी नियम से पतित हो जावे उसके साथ इन्तहा दर्जे का प्रेम करके उसका सुधार करना चाहिए। क्योंकि अधिक से अधिक मलीन बुद्धि प्रेम के जल से एक छिन में शुद्ध हो जाती है। यह परम साधन है। उसके उलट उसके साथ नफरत करनी या तौहीन करनी हानिकारक है। यह प्रेम ही सब त्रुटियों की औषधि है।’

## 5. सदाचार

श्री महाराज जी ग्रन्थ “श्री समता विलास” में समझाते हैं:

- सत् केवल ईश्वर यानी जीवन शक्ति ही है। प्रभु परायणता ही सदाचार का स्वरूप है। जब तक बुद्धि देह परायणता में रहती है, तब तक निर्मल सदाचार को कभी प्राप्त नहीं हो सकती। नाना प्रकार के विकारों को कल्पित करती रहती है। जो कभी-कभी कर्म स्वरूप होकर प्रगट हो जाते हैं। जब तक पांच विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) की वासना शुद्ध न हो तब तक सदाचार होना अति कठिन है और जब तक सत्स्वरूप ईश्वर का पूर्ण विश्वास और सत् निदिध्यास न प्राप्त होवे, तब तक इन विकारों की अग्नि शान्त नहीं हो सकती।
- सदाचार यानी सत् में आचरण करना तब ही हो सकता है, जब केवल सत्स्वरूप ईश्वर को ही सत् करके निश्चय में धारण किया जावे और तमाम प्रकृति जाल को असत् स्वरूप में देखा जावे। तब मानसिक विकारों से निरोध प्राप्त होता है। और बुद्धि निर्मल हो करके तमाम शारीरिक कर्मों में पवित्र स्वरूप से विचरती है।
- अगर कोई अपना कल्याण चाहे तो सबसे पहले अपना आचरण पवित्र करे।
- अगर कोई अपनी उन्नति करना चाहे तो नित्य ही पवित्र विचारों को धारण करे।
- जिस वक्त बुद्धि सत् आचरण में दृढ़ होती है, उस वक्त तमाम दोष खुद-बखुद ही नाश हो जाते हैं जैसे प्रकाश के होने से अन्धकार का अभाव हो जाता है।

- हर वक्त शारीरिक यात्रा के सही भेद को समझ करके तमाम विलक्षण कर्मों का त्याग करना ही उच्च जीवन है। इस वास्ते अधिक से अधिक यत्न करके नुमायशी और ऐयाशी (भोगमयी) जीवन का त्याग करना और कुसंगत से परहेज़ रखना और नित्य ही प्रभु चिन्तन में मनोवृत्ति को लगाना ही परम शुद्धि के देने वाला यत्न है।

ग्रन्थ श्री समता प्रकाश में महाराज जी ने सदाचार के दस लक्षण बतलाये हैं। हर लक्षण के सम्बन्ध में चार-चार चुने हुए शब्द इस प्रकार हैं:

### सत् विश्वास यानी यकीने पाक

जिसके मन विश्वास नहीं, वह तो भूत शैतान।  
 न करनी की सूझ है, न कर सके नादान॥  
 बेयकीना होये के, दीन दुनी दोए हार।  
 न दुनिया का सुख मिला, न अगला राह संवार॥  
 पूर्ण प्रभ विश्वास से, जीव पाए सत ठौर।  
 “मंगत” मिटे सब वासना, काल करम की दौड़॥  
 झूठ भरोसा त्याग के, राखो सत् भरवास।  
 “मंगत” जगत को देख के, न भूलो प्रभ अबनास॥

### सत् पुरुषार्थ यानी साची कोशिश

जां के मन उद्धम नहीं, सो दलिद्री जान।  
 करनी तो कुछ न करे, मुख से बड़ा गुमान॥  
 सत् पुरुषार्थ धारियो, सत् लोक परतीत।  
 मन की मैल उतारियो, सुन साध बचन पुनीत॥  
 सत् पुरुषार्थ धार के, जग से पाओ जीत।  
 “मंगत” करनी कर चलो, जो तीन काल सुख देत॥

उद्धम ना नर छोड़िए, जब लग देह में प्राण।  
“मंगत” उद्धम जो रखे, नित अधिक पाये सो शान॥

### सत् विचार यानी साची सोच

जिसके अन्दर सोच नहीं, सो तो कुफ़र शैतान।  
कबीरा करे गुनाह नित, ख़ासलत धर हैवान॥  
बिन विचार न पा सके, दीन दुनी की सारा।  
गफ़लत में ही मिट जाए, जैसे धुआं अंबार॥  
करम देवे न फल कोई, जो कीजे बे सोच।  
जतन अकारथ सब जाए, बैठा सर को नोच॥  
समझ सोच कर घालियो, होवे मुशक्कत पूरा।  
चले हुक्म उस्ताद ले, “मंगत” मिलें हुजूर॥

### निर्मानता यानी आजज़ी

रहमत रब की पाए के, मत कीजो अभिमान।  
अन्दर तेरे वस रहया, सब कुछ करे पहचान॥  
धन जोबन और माल सब, है तिस को नित दात।  
अपना जो कुछ न भया, मान करे कमज़ात॥  
कुफ़र काम शैतान का, आजज़ा मानुष ज़ात।  
बन्दा करे गुमान जो, सो कीजे अपना घात॥  
भूल कर न कीजिए, कूड़ी देह का मान।  
“मंगत” एक ही पलक में, उड़ जाए धूड़ समान॥(149)

### परोपकार यानी नेकी

इस दुनिया में आये के, खाट चलो कुछ लाभा।  
आगे बडी सरकार है, देवे पूर हिसाब॥

यह लाभ इस संसार में, जानयो चतुर सुजान।  
 “मंगत” मन उपकार हो, हाथों से हो दान॥  
 मारग पर उपकार का, जीवन करे सुचेत।  
 प्रभ चरण विश्वास हो, सब स्वार्थ मिटे विखेप॥  
 मन से करे उपकार जो, दुःखी दीन के साथ।  
 “मंगत” शोभा जगत करे, आगे बख्शा देवे सो नाथ॥

### अपनी वस्तु पर सन्तोष

हक पहचाने अपना, पर हक देवे न चीत।  
 हक पराया जो खाये, सो ही नर बदनीत॥  
 पर नारी सम मात के, पर धन विष सम जान।  
 पर निन्दा वड ताप है, तापे तीन जहान॥  
 खेती और चाकरी में, पर हक करे पछान।  
 शुद्ध कमाई जानिए, जो ऐसा निश्चय मान॥  
 बिना सबर और शान्ति, दुनिया रूप अंगार।  
 पाप करे बहु भान्ति के, जल-जल भये अन्धयार॥

### प्रेम यानी लागरज़ मुहब्बत

प्रेम के रंग में रंग लो, यह चोला चतुर सुजान।  
 बार-बार नहीं पाओगे, उठ मारग खरा पहचान॥  
 दोहे जहान में बे हुरमती, जो पाये न प्रेम की सार।  
 प्रेम बिना मानुष को, जानो ढोर गंवार॥  
 छाड़ो अपनी खुदी को, सुनियो राह निज़ात।  
 मानुष से देवत होये, जो मन प्रेम कमात॥  
 सिद्ध तपीशर औलिया, नबी वल अवतार।  
 एक प्रेम प्रीत से, “मंगत” भये निस्तार॥ (51)

## सादगी यानी सादा जीवन

जिसके मन में सादगी, साचा सादक सोये।  
अपना सुख दूजे देवे, माने रब रज़ाये ॥  
जीभा की रसना माहीं, मत होवो गुलतान।  
“मंगत” कूंडी नरक की, जीव करे हैरान ॥  
निर्मल आहार नित कीजे, निर्मल पाईये विचारा।  
“मंगत” महिमा साहेब की, तब चित्त करे चितार ॥  
सादा खावन, सादा लावन, सादा बचन बिलास।  
“मंगत” रहनी देव की, जो पाए तो पाप विनास ॥

## सत्संग

सोहबत जैसी जिसकी, ऐसा होये रूप।  
बगला हंस के डार में, हो गया हंस सरूप ॥  
चोरी यारी रंग तमाशे, मन को इनसे ठाक।  
संगत कर सत् पुरुष की, मालिक पावें पाक ॥  
मन में तो शैतान है, सच सोहबत से होए दूर।  
जब मन आया चन्दना, अन्धकार भयो काफूर ॥  
पानी ज्यों तरावत, देवत कुल संसार।  
“मंगत” साचे संग से, दिन-दिन सुख अपार ॥ (154)

## मौत की याद

मरना मनो विसार के, पाप करे बहु भान्त।  
धार खुदी शैतान की, पावत न कभु शान्त ॥  
मुर्शद कामिल जगत में, एको मौत पहचान।  
जिस मरना मन मानिया, करे न दूजे हान ॥

और का मरन देखता, अपना मरन भुलाए।  
 यह ही गफलत धार के, बेहद पाप कमाए॥  
 इक मरना मन याद कर, दूजे साहेब की याद।  
 तीजे नेकी याद कर, मन्जूर होवे फरयाद॥  
 दस भूखण सदाचार के, जो जन लेवे धारा।  
 तीन लोक का सुख मिले, मानुष देह बलिहार॥  
 जप तप संजम का फल ये ज्ञान।  
 सदाचार के आवे पहचान॥  
 धरम करम की सकल ये सार।  
 मन में आवे जो सदाचार॥  
 सत् करम सदाचार सरूप।  
 सकल मिटावे विखे के कूप॥  
 मन तन में ठांड उपजावे।  
 सदाचार की रसना जो पावे॥  
 सब की सार सब की तहकीक।  
 सदाचार जग साचा रफीक॥  
 जितना जिसमें सदाचार समाए।  
 इतनी ही तिसमें प्रभताए॥  
 सदाचार है ज्ञान की सार।  
 सदाचार ले होए उजियार॥  
 सदाचार है शिरोमनी, सत् मारग निरंकार।  
 “मंगत” तिस में जो मरे, सो ही जान अवतार॥



## 6. परम गति योग-हालते मेराज

- ग्रन्थ “श्री समता विलास” में कई जगह देह की प्रकाशक शक्ति का वर्णन आया है जो इस सरजीवित रखती है। इस अध्याय में महाराज जी के कुछ एक विशेष वचन दिये जाते हैं जिनमें आपने ईश्वर भक्ति की प्राप्ति, समता ज्ञान का रास्ता और समुचित प्रयत्न के बिना परम सिद्धि योग की अवस्था को प्राप्त करना असंभव बताया है। प्रकाश की ये किरणें हमारे मन के अन्धकार को दूर करने और उसे प्रकाश की ओर बढ़ाने में अत्यन्त सहायक सिद्ध हो सकती हैं, जो हमारा अपना वास्तविक स्वरूप है।
- “देह की प्रकाशक शक्ति जो सरजीवित करती है, उस परम तत्व का निश्चय ही इस माया के अन्धकार से मुक्ति देने वाला है” (42/37)।
- “इस संसार का जो मरकजे कुल (केन्द्र बिन्दु) है या देह का साक्षी है, उस परम पुरुष का विश्वास होना परम धर्म है। तमाम संसार की जो जिन्दगी है, जिसके प्रकाश से सब प्रकाशित हो रहे हैं और जो हमेशा है, खुशी और ग़मी (हर्ष व शोक) से जो न्यारा है उस परम पुरुष में प्रीति रखनी परम कल्याण के देने वाली है।” (44/42)
- “सब संसार जिसका स्वरूप है और अन्तर-बाहर तृन-तृन को जो प्रकाश कर रहा है, जिसके बगैर न कोई हुआ और न ही होगा, उसी परिपूर्ण परमेश्वर की प्राप्ति करनी ही असली मुक्ति और समता शान्ति है। उस मालिके-कुल (सृष्टि के स्वामी) की याद करनी और अपने अन्तरविखे ध्यान करना ही असली भक्ति है।” (46/52)
- “कुल संसार का चक्र बुद्धि की कमी-बेशी में चल रहा है। बुद्धि

की लीन अवस्था ही सत्स्वरूप आत्मा है। बुद्धि की विचरित हालत ही कर्म फल की वासना है। विचरित हालत में कल्पना द्वारा संसार को अनुभव करती है और लीन अवस्था यानी समाधि में केवल आनन्द स्वरूप को अनुभव करती है।” (199/5)

- “सम बुद्धि यानी आत्मानन्द को प्राप्त करने की खातिर प्रथम ईश्वर सिमरण परिपक्व होना चाहिए। अन्तर्गत हृदय में नाम का सिमरण जो किया जाता है, वह असली सिमरण है।.....” (210/1)

- “सबसे पहले सिमरण दृढ़ता, दूसरी हालत में भजन की प्राप्ति, तीसरी हालत में ध्यान और चौथी हालत में समाधि है।.....” (213/10)

- “दृढ़ निदिध्यासन जब नाम का धारण किया जाता है, तब तमाम संकल्प-विकल्प का अभाव हो जाता है और बुद्धि एक ध्यान में निश्चित होती है और द्वन्द्व की आसक्ति से निर्बन्ध हो जाती है। ऐसे दृढ़ अभ्यास की प्राप्ति से अन्तर में सत् शब्द आत्म जोत (ज्योति) अनुभव होती है। प्रथम शब्द की अनुभवता नाभि स्थान में प्रतीत होती है। बाद में वह अखण्ड धारा ऊपर मस्तक के दरम्यान (बीच में) अनुभव होने लगती है। ऐसी स्थिति जब बोध होवे, तब बुद्धि शारीरिक कामनाओं से पवित्र हो करके आत्मस्वरूप में एक ध्यान होती है। जब ध्यान की ऐसी अवस्था अधिक परिपक्व हो जाती है तो मस्तक के ऊपर सुन्न शिखर (सिर की चोटी) में अखण्ड नाद अनुभव होता है तब बुद्धि दुर्मति छाया से पवित्र होकर अपने निज स्वरूप में विश्राम पाती है और तमाम शारीरिक दोषों से अलग हो जाती है। और तमाम इन्द्रियों के भोगों से अचेष्ट होकर विचरती है। ऐसी अवस्था की परम सिद्धि योग आरूढ़ता का स्वरूप है।” (565/116)

- “जब बुद्धि आत्मा का अन्तर में साक्षात्कार कर लेती है, तब

शारीरिक क्रिया में निर्मान, निर्मोह, निष्काम, निर्द्वन्द्व होकर विचरती है यानी नित्य ही अपने में असंग और अलेप हो करके स्थित होती है और तमाम वासना के जाल से विलग हो जाती है। यह ही परम निहःचलता है। जिसको प्राप्त होती है, वह सर्व कीर्ति योग्य पुरुष है।” (581/148)

इस अध्याय में हर वचन के अंत में जो अंक दिये गये हैं, वह समता ग्रन्थ “श्री समता विलास” (हिन्दी) चतुर्थ संस्करण का पृष्ठ/अनुच्छेद संकेत देते हैं।

## सत वाणी

जड़ देही को जो सरजनहारा। सरब शकत सिमर करतारा॥

देह विकार से न्यारा होई। चेतन परगास परमगत सोई॥

जब लग मन में शान्त न आई। परमगती कभू धाम न पाई॥

जब सतनाम का टांक लगाया। मन विकराल तब घर में आया॥

देह के सुख से जब मन उकताये। आतम सुख की रसना तब पाये॥

आतम तत में जब लीन हो जाई। आनन्दसरूप तब परमगत पाई॥

परमगती सत शब्द अनूप। तिस का ध्यान करे भ्रमकूप॥

मनुआ राख शब्द के माहीं, घट में पवन को पियो॥

उलट दृष्टि आकाश पछानो, धार शब्द लख लियो॥

धारा माही ध्यान लगाओ, सत खण्ड वासा पाओ॥

निर्मल परीत से नाम कमाओ, भव दुस्तर तर जाओ॥

साचा शब्द पहचान निरन्तर, जो सुन्न के घाट समाया।

“मंगत” जिस जन सेव पछानी, बौहड़ गर्म नहीं पाया॥

## सत् साधन मूल

जत सत्, त्याग चित रहे समाए। सत् तत बिमल घट अन्तर पाये॥

सत् साधन का मूल है नाम। गुरमुख जपे पावे विसराम॥

नाम ध्यान नाम ही योग। अनहद नाद नाम का भोग॥

मूल नाम सतगुरू बतलाया। अगम निगम की गम को पाया॥

## कुछ विधि संकेत

प्रथमे आसन सहजे बांधे। इन्द्री इस्थिर मनुआ खांडे॥

मुख नयन जीभा को बांधे। साचा नाम हिये में सांधे॥

धीरे-धीरे पवन को पीवे। शुद्ध ध्यान में नाम जपीवे॥

हकार साकार को एह विध मिलाए। बांधे पवन पश्चिम घर जाए॥

मूल द्वार में बन्ध लगाए। उलट पवन सत नाम कमाए॥

स्वास सुरत मिल किया हलोल। नाभी अस्थान में पाई कलोल॥

ईड़ा पिंगला सुखमन नाली। तीनों मिलें ऊपर तिरनाली॥

सुखमन नाली में पवन भरीजे। उमगे नाद माया गढ़ छीजे॥

स्वास सुरत को पल पल जोड़े। अगम शब्द का चढ़े सरूरे॥

सुखमन खुली शब्द घर जागा। साध सीख पाई बड़भागा॥

चढ़े आकास खोल बंकनी नाली। गरजे शब्द भीतर तिरनाली॥

आसन धरती सुरत आकासे, लखे ज्ञान निर्वाणी।

उपजे शब्द जोत दरसावे, सुरत भई अकलानी॥

ऊपर चढ़े शिखर को जाए। केवल नाद संग प्रीत कमाए॥

सुन्न गुफा में करे ध्यान। अनहद गरजे सहज की तान॥

सुरत समाई शब्द में, चढ़ी सुन्न के देश॥

“मंगत” नज़री आया, आद पुरख जगदीश॥

(ग्रन्थ समता प्रकाश से)

## 7. विश्व शान्ति सन्देश

सन् 1952 का लिखा हुआ विश्व शान्ति संदेश ग्रन्थ “श्री समता विलास” का एक भाग। भौतिकवाद की अनवरत की गति पर नियंत्रण करने की उस समय जो चेतावनी दी गई थी, उसकी आवश्यकता आज की परिस्थितियों में पहले की अपेक्षा कहीं अधिक है। अतः श्री सतगुरु जी के संदेश में से कुछ एक महत्वपूर्ण बिन्दु लेकर निम्न में दिये जा रहे हैं-

- .....“सही यत्न के बगैर पूरन शान्ति का प्राप्त होना नामुमकिन (असंभव) है। इस जीवन रूप संसार को अच्छी तरह से समझ करके अपने आप को सही उन्नत करने का यत्न किया जावे जिसे जीवन का अंजाम (नतीजा) मुकम्मल (पूर्ण) शान्ति का सरूप हो जाए।”
- .....“तत्वों की खोज से अधिक से अधिक अश्चर्ज मुतालया (आश्चर्यजनक अध्ययन) प्रगट होते हैं। चूँकि अंजाम (अन्त) में परम दुःख और नाश के देने वाले होते हैं, इनमें सत् शान्ति की प्रतीत रखना अति मूढ़ता है। सूरज, चन्द्रमा, पवन, पानी आदि ताकतों पर पूरा-पूरा कंट्रोल हो जाये तो भी अन्तर की बैचैनी और अधीरता से छुटकारा हासिल करना नामुमकिन है। इस वास्ते इन्द्रियों के भोगों के वश होकर बाहर के तत्वों की तहकीकात (खोज) करके नये से नये सुख प्राप्त करने में बजाए शान्ति के अधिक से अधिक अशान्ति और भय ही प्राप्त होगा, यह निश्चय होना चाहिए। जैसा कि आजकल की साईंस का असर हर एक के अन्तःकरण में हो रहा है। बैरूनी (बाहिरी) तहकीकात यानी अधिक मादाप्रस्ती (भौतिकवाद) का नतीजा भयानक अशान्ति, भ्रष्टाचार, अति छल, कपट और अति नाश के देने वाला है।

- मादाप्रस्ती यानी इन्द्रियों के भोगों में अधिक आसक्ति ही परम नाश के देने वाली है। जिस वक्त आम मानुष ऐसे भोगमई जीवन में अन्धे हो जाते हैं, उस वक्त अपने अन्तर में बढ़ती हुई तृष्णा की अग्नि अधिक उपद्रव की तरफ रागव (प्रेरित) करती है। तब साथ ही अपनी भी नाश हो जाती है।"
- "एसे भोगवाद, प्राकृतवाद और नास्तिक जीवन के नतीजे को समझ करके अपनी ग़लत तहकीकात से बाहोश जीवन शक्ति की तहकीकात में यत्न करना चाहिए जिससे अन्तर में सत् शान्ति प्राप्त होवे और बाहर भी सत् शान्ति अनुभव होवे।"
- "मादाप्रस्ती से कभी भी ज़रूरतों की अधिकता कम नहीं होती, बल्कि दिन ब दिन (अनुदिन) बढ़ती जाती है और तमाम मानुषों में शत्रुपन का भाव प्रगट करती है। मादाप्रस्ती, खुदप्रस्ती और भोगप्रस्ती के सैलाव (बाढ़) को रोकने की कोशिश करें। अपने-अपने पवित्र आचरण और सत्यग्रही निश्चय से। अगर यदि सैलाव रोका न गया तो इसका नतीजा एक निहायत विनाश की शक्ल अख्तियार कर लेवेगा और इस मादियत की चमक-दमक के ज़माने को एक तरीकी (अन्धकार) की शक्ल कर देगा क्योंकि मादाप्रस्ती (MATERIALISM) का नतीजा अकसर ऐसा होता है....."

"केवल सदाचार की दृढ़ता.....से ही अपने-आपको शान्ति प्राप्त होती है। ऐसे ही दूसरों को भी पवित्र आचरण की ठण्डक से सत् शान्ति प्रतीत होने लगती है। यह ही रास्ता अमन और शान्ति का है....."

"जो सदाचार की उच्चता को नहीं समझते और ऐसा कहते हैं कि लोक सेवा में अपने ज़ाती (निज़ी) आचरण की कोई ज़रूरत नहीं है.. ऐसे सज्जन प्राकृत मार्ग में बिल्कुल अंजान हैं क्योंकि सबसे पहले एक दूसरे पर असर आचरण का ही होता है।....."

- “हर एक मनुष्य अपनी सही मानसिक पवित्रता को प्राप्त करने की कोशिश करे क्योंकि सुख और सब विजय इसी में है और यह ही अमन और शान्ति का रास्ता है।”
- ..... सब मानुष मात्र में एकता प्रेम प्रगट होवे जिस करके निर्मल शान्ति से सब गुणी अपनी-अपनी जीवन यात्रा को मुकम्मिल कर सकें और इस समय को देवताओं का समय बना दें।”

## 8. कुछ और चुनिंदा उद्धरण

( क ) ग्रंथ श्री समता प्रकाश से

### संसार की रचना

प्रथम मनसा सहज उपजाई। बिना कारण रची रचनाई॥  
तीन गुण माया घर परगट कीनी। अनेक प्रकार रचना रच दीनी॥  
तेज वायु जल पृथ्वी आकाश। इन पांचों का सकल तमाश॥  
बुद्धि मन और अंहकार। आठ तत प्रगट रूप संसार॥  
अचरज माया गत होई बिस्तार। चार खानी रचया संसार॥  
चांद सूरज की अत जोती प्रकास। दिवस रैन प्रगटे पख रूत मास॥

### जगत का विस्तार

अरबां तारा मंडल आकास। अरबां पानी पवन बिलास॥  
अरबां दिवस रैन पख मास। अरबां वर्ष करें बिलास॥  
अरबां रवि चन्द्र परगासे। अरबां इन्द्र राज बिलासे॥  
अचरज खेल जगत बिस्तारा। अनन्त सरूप हो किया पसारा॥  
अचरज रचना जगत की, अलेख अभेद अपार॥  
“मंगत” गिनती न आवे, जुग-जुग करूं शुमार॥

### शरीर और आत्मा

काया कोट अजब है साजा। जिसमें साहेब आप बराजा॥  
काया मन्दिर का जिस भेद लखाया। सत परमेश्वर तिस अन्तर पाया॥  
देह रूपी मकान में, पावें लामकान॥  
मिट्टी अन्दर देखया, मालक तीन जहान॥  
काचे इस वजूद में, देखें लावजूद॥  
“मंगत” हक परतीत रख, सब दर साहेब मौजूद॥



## आत्म पूजा

देह मिथ्या सत आत्म जाता। नाम सिमर के भयो रंग राता।।  
ज्यों-ज्यों मन आत्म को पूजे। मिटे विकार तृष्णा सब बूझे।।  
देह से भिन्न कर सत् तत सूझा। एको पछान से आनन्द घर बूझा।।  
निज सरूप में लीन समाई। आनन्द सरूप आतम दरसाई।।  
देह ममता को त्याग के, आतम पूजे जोए।।  
“मंगत” मिटे चित कामना, पूरण ज्ञानी होए।।

## मन का जीतना

मन तृपती कारण करे निज जतना, भोगे भोग नित बढ़े कल्पना।।  
सत सरूप जब चिन्तन किया, गहरी प्रीत लगाए।  
तब इस मन को तृप्ती होई, मूल रोग दुःख जाए।।  
मन जीता जग जीता, भयो शाहन का शाह।  
“मंगत” काटी करम गत, टूटे भरम असगाह।।

## अस्थिरता

धन जोबन न स्थिर रहे, न स्थिर रहे परिवार।  
ना स्थिर रहेगा तन ये, काचा चाम मंजार।।  
माटी का कलबूत यह, अन्त माटी समात।  
सरजनहार न जानिया, क्या बने पछतात।।  
यह संसार सराये, जीव मुसाफिर नीत।  
“मंगत” खोज सत शान्ति, औध जात है बीत।।

## कर्म फल

जो बीजे सो काटना, एह निश्चय कर मीत।  
बिख बीजे, बिख पाईये, सुन साहेब की रीत।।  
ऐसा बीज न बीजियो, जो काटन में दुःख देत।  
कर्म रेख अटल है, सुन साचा विवेक।।  
गुणी मुनी नहीं छूटते, जो बीजा सो खाए।  
तासों नर विचार के, साचा करो उपाए।।

## संकट हरण

एको प्रभ सब हरे सन्ताप, निर्मल चित से नित कर जाप।।  
संकट हरण, मंगल का दाता, प्रभ का नाम चितार।  
“मंगत” यतन यह सार है, नित ही नित जप सार।।  
सरब परकाशी शक्त जो, मन में सदा आराध।  
“मंगत” दीन दयाल प्रभ, सब दूर करें अपराध।।

## विवेक

सत् विवेक यही परधान, साचे धर्म की आवे पहचान।।  
सत् विवेक यही सुख रास, पर उपकार में होये निवास।।  
बिना विवेक ना पा सके, दीन दुनी की सार।  
केवल सत विवेक से, होवे भ्रम दुःख छार।।  
शोभा मानुष देह की, जो निर्मल मिले विवेक।  
“मंगत” साधन सार यह, विसरो घड़ी न एक।।

## केवल पठन और कथन

पढ़ने से न रीझता, खलक का परवर्दिगार।  
जिस जन तिस को मानया, तिस जन हो छुटकारा॥  
विद्या तो बहुती पढ़ी, पर सूझी न कुछ सार।  
विद्या को कहु दोष न, पढ़नहार गंवार॥  
कथनी से कुछ न बने, ख्वाहे कथ कथ थके जुग चार।  
“मंगत” करनी सार है, जो करे सो उतरे पार॥

## छुटकारा - खुलासी

बन्ध खुलासी सहजें पाएं। जो चित प्रीत प्रभ नाम ध्याएं॥  
होए खुलासी प्रभ रूप ध्याए। जां से उत्पत तां लीन समाए॥  
पीर पैगम्बर औलिया, सबका यही विचार।  
सिमरो साचे नाम को, अन्त पावें छुटकारा॥  
बन्ध खुलासी जगत में, केवल मन परतीत।  
“मंगत” मन निहःचल भया, भव से पाई जीत॥

## स्वार्थ और परमार्थ

स्वारथ और परमारथ दो मारग प्रगट भये।  
इक भोगें निज सुख को, इक पर को सुख नित दे॥  
पर सुख को जिस सेवया, सो चले जगत को जीत।  
निज सुख मोहित जो भये, सो रोवत चले हैं मीत॥  
सत पुरुषों की कीरती, नित मारग साच विचार।  
“मंगत” करनी सो करो, जो जीव का करे उद्धार॥

## निर्भयता

खोज करो नित अभय पद मीता, जां को परस पावें शान्त पुनीता॥  
निर्भय रूप नारायण एक, निर्मल चित्त से राखो टेक॥  
भय को हरे, मंगल को देवे, जो सत्गुरू सीख विचारे।  
सत् सरूप मिले विश्वासा, सत नाम की रसना धारे॥  
निर्भय होये जीव तब, जब सत् सार कमाए।  
“मंगत” अन्तरगत माहीं, सत ठाकुर दरसाए॥

## मनुष्य जन्म की महानता

निज सरूप की कीजो खोज। दुर्लभ जनम की पाओ मौज॥  
मानुष जनम की दुर्लभ कार। आतम देखे विच काया मंजार॥  
मानुष जनम की यह है सार। सत् सरूप मिले करतार॥  
जां से आया ता जाए समाए। दुर्लभ जनम में यह कार कमाए॥  
मानुष तन को पाये के सत मारग ज्ञान विचार।  
“मंगत” समता शान्ति, तत्त खोज परम पद सार॥

## सत् सम्पत्ति-सच्ची दौलत

सत् सम्पत्त प्रभ नाम विचारी। निर्मल निश्चय अन्तर्गत धारी॥  
निहःचल ध्यान चित्त अन्तर पाई। सत् सरूप की रसना खाई॥  
साची पूंजी गुर ने दीनी। मोह माया की भरमन छीनी॥  
सत् पुरुषों की यह साची सीख। केवल सत प्रभ रूप अलेख॥  
सत् सम्पत्त हरि नाम है, छिन-छिन लयो चितार।  
“मंगत” आवन जगत में, हर जन का भयो बलिहार॥

## त्याज्य वस्तुएं और कर्म

भंग, तंबाकू, मदिरा, चंडू गांजा जोए।  
चरस अफ्यन रिश्वत तजे, सो ही शूरा होए॥  
चोरी, जुआ, कपट छल, चौपट ताश शतरंज।  
सिनेमा, थियेटर, ज़ामनी, नित देवे जीव को रंज॥  
आलस निद्रा त्याग के, पर की सेव विचार।  
“मंगत” देही चाम की, एक दिन होवे छार॥

## वैर का त्याग

बारम्बार विचारिया, जग रहना नाहीं मीत।  
वैर बदी को त्याग के, सब से राखो प्रीत॥  
प्रेम साहिब का रूप है, सकल मिटावे ताप।  
मन-मन आवे शान्ति, बढ़े अधिक परताप॥  
जतन-जतन कर राखियो, साचा एक प्यार।  
“मंगत” मिटे सब दूषना, जब संगत साच विचार॥

## ममता का त्याग

निर्मल जुगती करो विचार। मोह माया का मिटे अंधकार॥  
देह की ममता विकार परकासे। साखी पूजे समता चित्त भासे॥  
मन के औगुन तब ही जायें। झूठ देही का जब मोह मिटायें।  
मिथ्या मोह माया का जाई। सत् विश्वास आतम घर पाई॥  
मन की ममता नास होवे, जब सत् रहनी चित पाए।  
“मंगत” पूरण जतन से, करम जाल बिनसाए॥

## पांच विकारों की त्याग

पांच विकार महा दुखदाई, जले सकल संसारा।

परमारथ परतीत बिन, नहीं जीव पावे निस्तारा।।

पांच विषय का मूल विनासे, जब आतम तीरथ नहाई।।

दुर्मत त्याग सुख सहज समाये, परम गति सो पाई।।

मिथ्या देह विकार अत, तृष्णा अगन बढ़ाए।

“मंगत” सो जन मुक्ता भये, जो नाम जपें सुखदाए।।

## शुद्ध आहार

जो कोई अपना जीवन सुधारे। शुद्ध आहार मन माहीं विचारे।।

सत् पुरुषारथ रहनी सत् पावे। सूक्ष्म आहार शुद्ध रूप का खावे।।

आहार पवित्तर अपरम गुन देवे। पवित्तर आहारी प्रभचरण का सेवे।।

मदिरा मांस का जो नित आहारी। बुद्ध चण्डाल तिसमें विस्तारी।।

खट्टा-मिट्टा तीखना चट पटा नित खाए।

“मंगत” दीरघ वासना, मन को नित भरमाए।।

## दूसरों का बर्ताव

मीठा सबसे बोलिए, रखिए सब से हेत।

नारायण सर्वज्ञ हैं, रमया सब के नीत।।

पर निन्दया पर हान को, मन से कीजो दूर।

परहित जीवन धर्म में, मन कीजो मखमूर।।

जप तप का फल एह नरा, जे सीतल आवे मत।

“मंगत” सीतल बोलना, परम गुणों का तप।।

## कुछ और गुण

सत सील सन्तोष, दीनता और पर उपकार।  
“मंगत” मारग मुक्त का, प्रेम से लीजो धार।।  
मान मध और ईर्षा, जो चित्त से करे त्याग।  
“मंगत” भाओ दीन में, प्रभ भगती रंग लाग।।  
खिमा, दया और बन्दगी, साचे प्रभ का भेख।  
“मंगत” हरे विकार सब, पाए आनन्द अलेख।।

## शुद्ध व्योपार

नफा समान खर्च करे, बचत कीजिए नित।  
लक्ष्मी की आदर करे, फ़जूल ना त्यागे मित।।  
शुद्ध करें व्योहार को, नफा लियो समान।  
थोड़ी लियो ब्याज नित, धन न पावे हान।।  
शुद्ध व्योहारी पुरुष जो, अघट लक्ष्मी पाए।  
“मंगत” सत व्योहार में, लक्ष्मी वास कराए।।

## सेवा

सेवा को धारण करे, मन में आवे धीर।  
निर्मल धारा प्रेम की, चित्त परसे अति गम्भीर।।  
सत सेवा हिरदय धरो, बिरछों की मत ले।  
धार भाव निष्काम को, फल छाया और को दे।।  
तन मन धन अर्पण करे, पर के हेत जो मीत।  
“मंगत” मारग धर्म में, सो पावे दृढ़ परतीत।।

## दया

दया जुगत इक धार है, अमृत मारग जान।  
अपना सुख सौंपे सभी, तब होवे दयावान॥  
दया धर्म अस्त्र से, भव मारग ले जीत।  
अपनी सम्पत सौंपकर, पावे वस्त पुनीत॥  
दया धर्म सन्तोष मत, वस्त परम गुणवान।  
“मंगत” सीतल बोलना, मिटे भरम तन मान॥

## धर्म

सत् धरम का सुनो निधान। मानुष जीवन को देवे कल्याण॥  
शान्त मारग जो जतन लखाई। धर्म सरूप जानो गुणी राई॥  
जिस जतन से मन निर्मल होई। सो साधन नर धर्म कहलोई॥  
जिस वस्तु से मन तृप्ताए। निरना धर्म का सो वस्त कहलाए॥  
धर्म का रूप न जीव कोए, न कोई मजहब और पन्थ॥  
“मंगत” यतन जो मुक्त का, सो धर्म कर वाचें ग्रन्थ॥

## जो तेरी आज्ञा प्रभु भावी

प्रभ आज्ञा में बिचरिए, होए ताप सब दूर।  
जीवन में जीवन मिले, नित आनन्द सरूर॥  
सकल मनोरथ त्याग के, प्रभ आज्ञा चित्त धारी।  
जो वरतावे सुख कर पूजे, यह छूटन राह सुखकारी॥  
हर सिमरण निर्मान स्वभाओ, सत् सेवा चित्त पेख।  
आज्ञा प्रभ में विचरिए, सुन जीवन मुक्त का लेख॥



## साची भक्ति

साची भगती मन देवे आनन्द। सिमरे नित ही परमानन्द॥  
बिना भगत नहीं मन निर्भय होए। जतन-जतन कर जीवन का खोए॥  
सकल दोष हरे सन्ताप। हर की भगत जिस कीनी जाप॥  
मीरां बाईं सदन कसाईं। हर की भगत से सब संकट जाईं॥  
साची भगती प्रभ चरण की, तब मन आन समाईं।  
“मंगत” दुबिधा सब मिटी, जीव परम सुख पाईं॥

## प्रभु परायणता

कारण कर्ता जान के, मन की चिन्ता त्याग।  
“मंगत” देह पिण्ड जिस दिया, रहो चरण तिस लाग॥  
निर्मल टेक प्रभ चरण की, जिस जन लीनी धार।  
“मंगत” मिथ्या जगत में, तिस के भाग अपार॥  
पद परसा नारायण का, जग पूरण काज संवारे।  
“मंगत” भयो मंगल घर माहीं, नित जाऊं चरण बलिहारे॥

## सत्

सत् ही जग का मूल है, सत ही करे परकाश।  
मिल सत संग खोजिए, सत नाम निरवास॥  
सत् के तुल नहीं तप है मीता, प्रेम तुल नहीं ध्याना।  
तुल सत्संग नहीं और उपाय, जो देवे जीव कल्याणा॥  
सत् ही मन में सिमरिये, सत् की पाईये रास।  
“मंगत” सत् परतीत से, मिटी भ्रम की फांस॥

## सत् सिमरण

सिमरण पूरण योग है, सिमरण पूरा ज्ञान।  
सिमरण के परताप से, देह का तजे गुमान॥  
प्रभ का सिमरण सार है, सन्तां करी पुकार।  
एक घड़ी न बिसरे, सो आनन्द भंडार॥  
सिमरण पूरा ज्ञान है, सिमरण पूरण विवेक।  
“मंगत” एह बिध सिमरिये, विसरे घड़ी नहीं एक॥

## निष्काम कर्म

निष्काम कर्म मनोरथ सब नासे। प्रभ आज्ञा में करे निवासे॥  
जो कुछ कीना तिस रजाई। तिस की परीत में आप गंवाई॥  
निष्काम कर्म करे जीव उद्धार, स्वारथ बुद्ध हरे अन्धकार॥  
कर्म फल इच्छया नहीं हृदय राख। प्रभ की आज्ञा पल-पल चाख॥  
निष्काम कर्म को साधिए, परम जतन से मीत।  
“मंगत” मारग मुक्त का, यह सहज योग पुनीत॥

## प्रभु अनुराग

प्रभ अनुराग मुक्त पद मीत। प्रभ अनुराग करे निर्मल चीत॥  
प्रभ अनुराग जब चित आई। मोह विकार संसा सब जाई॥  
प्रभ अनुराग प्रभ पूर मिलाये। जनम-जनम का भरमन जाए॥  
प्रभ अनुराग कल्याण पद मीत। जो मन परसे, लेवे जग जीत॥  
सत् अनुराग प्रभ चरण का, जब चित्त आन समाए।  
“मंगत” दुस्तर जाल से, जीव शान्त तब पाए॥

## गुरू शिष्य

माया अत घना गुबार। बिन गुर पाईये कभू नहीं पार॥  
गुर बिन नहीं सत निश्चय आई। गुर बिन नहीं सत भेद लखाई॥  
पाक मुर्शद पाक दिल होवे। पाक मुरीद जो चित जोवे॥  
देह मस्जिद की गई तारीकी। मिल के मुर्शद पाई रमज हकीकी॥  
दीन बन्दगी दिल में बसी, सुनी मुर्शद कदम सलाम।  
“मंगत” नबी और गौस सब, करें मुर्शद कदम सलाम॥

## सत्पुरुषों की कथा

सत् पुरुषों की कथा विचारो। पावें निर्मल ज्ञान सुखकारो॥  
सत् पुरुषों का आदर्श विचारी। आवे शान्त परम सुख कारी॥  
सत् पुरुषों की करनी परवान। सत पुरुषों की कहनी सुख जान॥  
सत् पुरुषों की रहनी मूल। भरम चक्र की काटे भूल॥  
सत् पुरुषों की कीर्ति, तन मन करे निहाल।  
“मंगत” नित सत्संग से, सत मारग लीना भाल॥

## समता ज्ञान

समता ज्ञान आनन्द की धारा। जो जन परसे हरे दुःख सारा॥  
समता ज्ञान केवल निज आप। सम सरूप जल थल व्याप॥  
समता ज्ञान पुन्न पाप से न्यारा। नित नेहःकरम रूप निरधारा॥  
समता ज्ञान यह सिद्धता पूरी। सम प्रकाश प्रभ आप हजूरी॥  
द्वन्द्व विकार जब मिटे, पाए जीव कल्याण।  
“मंगत” समता ज्ञान यह, विरला करे पहचान॥

## समता शान्ति

जनम-जनम जाए दूषना, जो पाए प्रभ परताप।  
केवल निर्मल शान्ति, एक साहेब का जाप।।  
नाम की रसना खाये के, मनुआ शान्त समाए।  
भरमन सकली त्याग के, सार शब्द लिव लाए।।  
मानुष तन को पाये के, सत् मारग ज्ञान विचार।  
“मंगत” समता शान्ति, खोज परम पद सार।।

## समता आनन्द

भाओ प्रेम घट परगासा। आद पुरख संग किया बलासा।।  
रोम-रोम में होए हलोल। साचा शब्द करे कलोल।।  
अद्भुत चानन घर में होई। तां में सुरती लई परोई।।  
ताप मिटे मन आनन्द पाए। अपने धाम में जाए समाए।।  
आनन्द सरूप को पाये के, मन तन भया निहाल।  
“मंगत” यह ही मोक्ष है, जहां देख ना पाया काल।।

## शून्य अवस्था

अन्तर सुन्न पाया अस्थान। निर्भय नाद की सुनी घर तान।।  
तां में सुरती भई लवलीन। अत परकाश लियो घट चीन।।  
शब्द ध्यान सुन्न समाध। शब्द का सिमरण हरे अपराध।।  
मन की मनसा शून समाई। शब्द ध्यान जब रंग रंगाई।।  
अन्तर शब्द पहचान के, मनुआं शून समाई।  
“मंगत” निज सरूप में, परम आनन्द को पाई।।

## सतपुरुषों की समानता

सब सिद्धन की सार सुन, सब गुनियां दा ज्ञान।  
सत् सरूप प्रभ एक ही, सब में भया परवान।।  
जैसी जिसने प्रीत करी, पायो सरजन हार।  
बन्धन से मुक्ता भयो, जग के भये आधार।।  
समां देश विचार के, नीति करे बखान।  
भेद भाव कुछ नहीं, केवल सार निधान।।  
होये मसीह जापता, पिता रूप सम प्यार।  
अनन भगत घट उपजी, दरसा रूप आपार।।  
जान जिस्म निरना किया, जिस्म से भया अतीत।  
जात तत पछान के, सदा रहे रमनीक।।  
राग द्वेश संशा गया, करम विकार विनास।  
सत्सरूप से मेला भया, जीव भया निरवास।।  
ऐसे जापे नाम को, गुणी मोहम्मद नीत।  
मित्तर सम प्रभु जान के, राखे दृढ़ परतीत।।  
बीच रचाई त्यागया, सकलो करम विकार।  
दीन आज़्जी में रमा, नफस दा किया शिकार।।  
परम त्यागी बुद्ध भया, सो तत जापे निरवान।  
काल करम संशा गया, बुद्ध निस्चल निरवान।।  
दुःख सुख प्राकिरत के, व्यापे नाहीं कोए।  
सार कला परगट भई, करम बन्ध सब खोए।।  
परमारथ को सोधता, रिषभ देव इस भान्त।  
मन करम और वासना, सकले द्वन्द्व भ्रांत।।

तिस से परे एक वस्तु है, नित ही शून्यकार।  
 सकल से न्यारा सो रहे, अखण्ड तत निरंकार॥  
 तिसमें बुद्धि जब गई, तब पावे बिसराम।  
 जैन मत्त परगट कियो, दे साचा पैगाम॥  
 जरूदश्त विचारिया, अग्नी रूप भगवान।  
 काल करम को भस्म करे, बुद्धि दे कल्याण॥  
 अगन पुजावे जगत में, कियो यह विचार।  
 मत पारसी परगट किया, देके ज्ञान आधार॥  
 सब ऋषियन की सार सुन, अध्यात्म विचार।  
 वस्तु एक ही पूजते, नाना जुगत मन धार॥  
 सब की सार को सुन के, दृढ़ कीजे विश्वास।  
 “मंगत” विचरे नाम में कटे करम की फांस॥

### मुसलमानी भेद

श्री महाराज जी की अमृत वानी यों तो सभी लोगों का सांझा कोष है,  
 परन्तु निम्नलिखित वाणी में आप विशेष रूप से मुसलमान भाईयों को  
 संबोधित करते हुए फरमाते हैं:-

कुफ़र शैतान को करे हलाक। हिर्स हराम को देवे तलाक।

दीन आजज़ी हुकम रबानी। तिन को पाए सुने भेद मुसलमानी॥  
 सरब रूहां का दर्द पछाने। ज़ात इलाही सब में जाने॥

हिर्स खुदी पर पढ़े तकबीर। साहिब राज़ी की सुन तदबीर॥  
 सब कुछ देखे तिस की रज़ा। साहिब राज़ी तब मिटे कज़ा॥

साहेब, लावजूद है, ला मज़हब जलाल।  
 “मंगत” कहे सुन काज़िया, ग़ैब दा सही अहवाल॥

सब फना नहीं रहे कायम। लाफनाह सो ज़ात है दायम।  
 सब के अन्दर तिस का जलाल। सब कुछ देखें तू उसका कमाल॥  
 सब को करे ज़िन्दा जावेद। ज़ात इलाही का नहीं पाए कोई भेद॥  
 पढ़ तू साचा नाम करीम। सब पर फज़ल करे जो रहीम॥  
 काया काबा विच अब्दी नूर। ग़ैब सदा बाजे बेहद तूर॥  
 सो ही इल्हाम कलाम रबानी। तिस को बूझ छाड तसव्वर फ़ानी॥  
 हक नाहक की करे पहचान। हक को खाए सो साचा मुसलमान॥  
 कुफ़र शैतान से तोबा पढ़े। राहत रंज में एक चित धरे॥  
 हिर्स खुदी तमा गुस्सा और बिकार। हक नमाज पढ़े करे तिन का शिकार॥  
 हिर्स फ़ेल उमीद, तीनों से पाए जो जीत।  
 “मंगत” कहे सुन काज़िया, सो मोमन पाये ज़ात पुनीत॥  
 साचा साहिब एक है और कुल फ़नाह।  
 पकड़ो दामन तिस का जो शाहों का शाह॥  
 विच रज़ाई होए नित चालो। तजो कज़ा मन कुफ़र को गालो॥  
 देह मस्जिद प्राण मुसल्ला। तिस पर बैठ कर याद तू अल्लाह॥  
 आवे जावे नफ़स की धार। लो तरीक़त मुर्शद दरबार॥  
 शौक यकीन का पहन पैराए। सिदक़ का तौक़ ले दिल से लटकाए॥  
 तख़्त चढ़े नौरोज़ को खोले। ग़ैब सदा रग रग में बोले॥  
 मिटे अंधेरा घर चानन होए। मुर्शद पाक मिल दूई दिल खोए॥  
 ग़ैब बाज़ार चांदनी चौक। तख़्त बराजे साहिब अनोख॥  
 लख आफ़ताब महताब चमकार। उठ के देख तू साहिब दीदार॥  
 जिस देखा सो होये खामोश। जाम बेखुदी पी होए मदहोश॥  
 अपने नूर संग मिल हुआ नूर। दोहे जहाने देखे इक हज़ूर॥

बड़ी सिफ्त सादक की जान। कुफ़र त्याग करी साहिब पहचान॥

नासूत, मलकूत, जबरूत बिकार। पाई लाहूत ऊंची सरकार॥  
अनहद नाद बाजन्त तूर। साचे नाम में रहे मख़मूर॥

दीन दुनी दोनों ले जीत। इक ज़ात इलाही रखे परीत॥  
चार दिसा में सजदा देवे। ज़ात हक़ानी की सिफ्त को लेवे॥

घर में बाजत नौबतां, मृदंग सुरंग नफ़ीर।  
“मंगत” कहे सुन काज़िया, सच घर बसे फ़कीर॥

मिल मुर्शद पा इल्म हक़ानी। कोह तूर चढ़न की सुनी कहानी॥  
आवे जावे नफ़स की धार। शाहरग माहीं वास गुज़ार॥  
दम-दम साहिब नाम करो याद। ग़ैबी खिड़की खोल साहिब सुने फ़रयाद॥  
उठत बैठत कर याद इलाही। छोड़ तसव्वर झूट फ़नाही॥

माल मुल्क और हाथी घोड़। वक्त आखीर जायें सब छोड़॥  
कूड़ी दुनिया संग हिर्स लगाई। सर पर बजे रबाब फनाही॥

कूचो-कूच नहीं मुकाम। राजा राणा मीर गुलाम॥  
न कोई रहया न रहने पाये। जलवा कुदरत साहेब दिखलाये॥

हारूं, कारूं सिकन्दर दारा। ख़िल्ज़ी ग़ौर नहीं मुग़ल दा खाड़ा॥  
पीर पैग़म्बर वली दरवेश। आवें जावें पेश दर पेश॥

यह दुनिया है सराए फानी। साहेब विसार पाए दुःख की खानी॥  
ज़ोर जुल्म यहाँ बहुत कमाए। होए नमाना खाक समाए॥

जिस दर बाजत नौबत हज़ार। उस दर बोलें उल्लू कराल॥  
तख्त ताज और दुनिया माल। औढ़क वार पूछे इजराईल अहवाल॥  
किस कारण तू जग में आया। बन्दगी छोड़ के बाद अमल कमाया॥  
हयाती छोड़ फ़नाह में जाए। अमल नबेड़ा उस साची दरगाहे॥



साचा मुर्शिद मिल पाओ हकीनी भेद।

मिले हयाती ले बन्दगी अबद जावेद॥

दीन गरीबी दिल लावे मूल। कुफ़र कफ़ार की ग़फ़लत जाए भूल॥  
कल्मा साच का साबन ले धोए। अमरी ज़ात विच दिल रोशन होए॥

इस फ़ानी जहान में जो आए, सो होए दिलगीर।

“मंगत” कहे सुन काज़िया, बिन बन्दगी न जाए तक़सीर।

सो मोमन पाए मालिक का नूर। जो जाए बैठे ऊपर कोहेतूर॥  
चौदा तबक़ के परले पार। देख कादर का चमत्कार॥

नौ लख तारा कोट आफ़ताब। चमके बिजली कोट महताब॥  
असंख तबक़ वहां होए परकास। राग छत्तीसों बानी बिलास॥

देख साहिब मन होई खुशहाली। पाई हयाती गई फनाह ख्याली  
सच्चे साहेब का सुनिये फ़रमान। ख़ालिक़ बैठा लाए दीवान॥

बारम्बार करे तहकीक। हम कलाम होए संग सच्चे रफ़ीक़॥  
साहेब रज़ा मन तन में लाए। हिकमत हुज्जत उमीद चुकाए॥

जिस घर में साहेब मेला होई। हूत की ज़ात नहीं देखी दूई॥  
शरह शरीयत नहीं दोज़ख़ जन्नत। वहां नहीं ज़नार न देखी सुन्नत॥  
एक साहेब सच्चा और सभी हराम। मालिक सच्चे की सुनी सच कलाम॥  
आशिक़ हो के कुफ़र को छोड़े। नफ़स कमज़ात का सर तोड़े॥

मिल मुर्शिद तरीकत पाए। हकीकत खोज मार्फ़त दिखलाए॥  
ग़ैब बाज़ार निदा रब्बानी। सादक़ हो के सुन रमज़ हक्कानी॥  
ख़्वाहिश ग़ज़ब का देवे दारूद। तरक़ तअस्सुब सुने साहेब फरमूद॥  
ऐसी कुरबानी देवे जोए। राह इस्लामी पावे जन सोए॥

तरको तरक मचावे शोर। चौदां तब्क जंजीरी तोड़॥

होए आज़ाद पीवे साहेब नाम। बेहिर्स होए पाए सिफ़्त इल्हाम॥  
तन मन की खुदी त्यागे। सो मोमन मालिक घर जागे॥

बन्दा सोई जो करे बन्दगी, पावे साहिब की ज़ात॥

“मंगत” कहे सुन काज़िया, यह साचा राहे निज़ात॥

## ( ख ) अमृत उपदेशों से

### वाहिद ज़ाते आला ( एक ही महान सत्ता )

वाहद एक ही ज़ात का ज़हूर (आविर्भाव) यह दुनिया है। वक्त-वक्त का महापुरुष तबदील होने वाली दुनिया में आकर अपनी अमली ज़िन्दगी के ज़रिए (द्वारा) भूले हुए लोगों को सच्चाई का रास्ता बता जाया करते हैं। उनके फरमाए हुए नेक असूल ही बाद में रवाज़ की सूरत अख्तियार कर लिया करते हैं। जिस्म के ज़ाहरी भेषों (भेख) को धारण करने में इन्सान की निज़ात नहीं है। कल्ब (अभ्यंतर) की सफ़ाई के वास्ते जनेऊ पहनना, धोती लगाना, रुण्ड-मुण्ड रहना, केस जटा धारण करना और भी कई किस्म के भेष बना कर फिरना धर्म या ईमान नहीं है। राहते अब्दी (शाश्वत शान्ति) तो उन (महापुरुषों) के सत् असूलों को धारण करने में है। तमाम मज़ाहब के राहनुमा दो रास्तो की हिदायत करते आए हैं। एक लागर्ज़ फेल यानी निष्काम कर्म का, दूसरा ज़ाते आला (महान सत्ता) का तस्वुर (ख़्याल)। खुदी से निज़ात पाने के वास्ते वह ही प्रभु के प्यारों का रास्ता है। जब खुदी (अंहकार) रयाज़त (अभ्यास) और तप करते करते खत्म हो जाते हैं, तब आप ही खुदा यानी मालिक बन जाता है। जैसे-

मन तू शुदम तू मन शुदी - मन तन शुदम तू जा शुदी

ता कस न गोयद बाद अजी - मन दीगरम तू दीगरी

मतलब : मैं तू हो गया, तू मैं हो गया, मैं तन हुआ तू जान हुई। ताकि बाद में यह न कोई कहे, तू और है मैं और हूं।

खुदा आप सबको यकीने पाक (सत् विश्वास) बक्शें और ईमान देवें।”

## खुदा प्रस्ती ( ईश्वर पूजा )

अपने आप को अलग समझना या तअस्सुब (धर्माधता) रखना ही कुफ़र है। सबमें उस ज़ाते कमाल (सत्पुरुष) का मज़र (दृश्य) है। खुदा प्रस्ती यही है कि उस ज़ाते-पाक (परमेश्वर) को हर शैय (वस्तु) में देखें और हर जगह उसे मौजूद समझें। सिर्फ मन्दिर-मस्जिद में ही वोह क़ैद नहीं है। यह तो सिर्फ इबादत (प्रार्थना) की जगह हैं। ग्रन्थ, वेद, अंजील, कुरान पढ़ने का मतलब यह है कि अपने अन्दर सच्चाई और सफ़ाई आवे। नफ़रत और रंजश (घृणा एवं द्वेष) के जज़बा (भाव) से पाक होकर अक्ले-सलीम (विवेक) से वाहदुल्शरीक (केवल एक) ही पहचान करे। मज़हब की फांसी से निज़ात पा कर लामहदूद (असीम) ताक़त को समझे, जिस ताक़त से सब जानवर आदमी से च्यूंटी तक चलते फिरते नज़र आ रहे हैं। उसका ज़हूर सब दुनिया को जाने, अपनी खुदी को खत्म करके। तब इस जिस्म में मौजूद जान का पता लगे और खुलासी हो।”

## वहदत प्रस्ती ( एक ईश्वर की उपासना )

‘हर एक (मनुष्य).....हिर्स, फेल, उमीद (वासना कर्म और आशा) इन तीन बातों में गिरफ़्तार, यानी फंसा हुआ है। इस क़ैद से छूटने के वास्ते खुदा की प्रस्तिश (ईश्वर भक्ति) है। जब तक जिस्म के बनाओ सिंगार में फंसा हुआ है, तब तक ख़्वाहशात (इच्छाओं) में जकड़ा हुआ है। वहदत प्रस्त नहीं हो सकता। यह बुत प्रस्त (मूर्ति पूजक) ही बना रहता है। जब रूह-ज़िन्दगी यानी ‘जान’ की तलाश में शुरू होता है, तब वहदत प्रस्त कहलाता है - चाहे हिन्दू हो या मुसलमान चाहे पारसी। हिर्स करके फेल (कर्म) करता है। फेल के नतीजे फायदा और नुक़सान,

खुशी-ग़मी में हर वक्त परेशान रहता है। जब तक हिर्स उठ रही है, कभी वहदत प्रस्त नहीं बन सकता। नबी, पैग़म्बर, अवतारों के हुक्म की तामील में ही सच्ची खुशी भरी होती है। उनके शरीर या जिस्म की प्रस्तिश (पूजा) लाभदायक नहीं।”

## असली मूर्ति पूजा

“साकार की पूजा यह है-जीती जागती जो मूर्तियां हैं, हर जीव मात्र की तन-मन से सेवा कर। किसी को भी मन, वचन और कर्म से कष्ट न दो। कोई भूखा है, उसकी अन्न, जल से सेवा करो, नंगा है कपड़ा दे दो और कोई दुःखी अनाथ है, उसकी जो सेवा बन सके, करो। जीभ के स्वाद के वास्ते किसी जीव का वध न करो। जब ऐसा अम्ल करोगे, तब तो असली मूर्ति का पुजारी जान।”

## ईश्वर क्या है?

“सन्तों ने खोज करके बतलाया कि जीवन की एक दशा या स्थिति का नाम ईश्वर है। जब मुर्शिद कामिल (पूर्ण गुरु) जिज्ञासु को अधिकारी जान कर अन्दर का रास्ता बतलाता है, जिस पर चल कर उस मुक़ाम पर पहुँचता है जहां दुःख-सुख, हानि-लाभ, जन्म-मरण, भूख-प्यास, मान अपमान वगैरह (इत्यादि) द्वन्दों से ऊपर उठ जाता है, जहां बुद्धि तक भी नहीं जाती, बल्कि लय को प्राप्त हो जाती है.....जहां आनन्द की बाढ़ आ जाती है..... तमाम हदें (सीमाएं) जहां टूट जाती हैं....जहां शरीर शरीर नहीं रहता ..... सब कुछ सत्स्वरूप हो जाता है। इस मुक़ाम को या इस हालत को सन्तों ने ईश्वर, अल्लाह, खुदा, वाहगुरु, सत पद, शिव पद, निर्वाण, बोध वगैरह अनेक नामों से मौसूम किया (पुकारा) है।”

## ईश्वर के प्यारों का मिशन

“फ़कीरों की निगाह में सब लोग यकसां (बराबर) हैं.....तुम

लोग दूसरों की खिद्मत (सेवा) करने वाले बनो, अपने सुख को हासिल करने की कोशिश न करो, बल्कि दूसरों को सुख देने की कोशिश दर कोशिश करो। जितने भी ईश्वर के प्यारे दुनिया में आये हैं, सब का मिशन एक ही था। वे प्रभु-प्रेम में ग़लतान (लीन) रहे। उनके पैरोकारों (अनुयाइयों) ने कई मत बनाए। विचार करो कि दूसरे के साथ नफ़रत (घृणा) करना यह कितनी ज़हालत (मूढ़ता) है।

## धर्म और शान्ति

“धर्म किसको कहते हैं? पवित्र धारणा को जिसको ग्रहण करके मन उपाधियों से निकल कर ईश्वर या कुदरते-कामला की तरफ जावे। मानुष जन्म में ही परम शान्ति को पाया जा सकता है और इसका एक मात्र साधन है - तन मन धन का त्याग।”

## धन का त्याग

“धन के बगैर जीवन का निर्वाह होना कठिन है और धन का ज़्यादा होना भी जीव को क्लेश देने वाला है। इसलिए महापुरुषों ने कल्याण का मार्ग यह तज़वीज़ फरमाया कि जो सम्पत्ति अपनी पवित्र कमाई से प्राप्त होवे, उसका कुछ हिस्सा अपनी जीविका में सर्फ (खर्च) करें और कुछ हिस्सा निष्काम भाव से अधिकारी जीवों की सेवा में लगाये। जो ऐसा निश्चय करने वाला पुरुष है, वह नाज़ायज़ (अनुचित) तरीके से कभी भी धन के मोह में आसक्त न होवे। यह साधन तमाम पापों को नाश करने वाला है।”

## तन का त्याग

“जो इस रीति को धारण करता है। वह अपने जीवन को परम शान्ति की तरफ ले जाता है। अर्थात् जो दूसरों के दुःखों को मिटाने के लिए अपने शारीरिक सुखों का त्याग करता है, वही परम भगत, भाग्यवान पुरुष शरीर के तमाम विकारों से छूट कर आत्म निश्चय को प्राप्त होता है।”

## मन का त्याग

“यह है कि मिथ्या संकल्प विकल्प जो अन्तःकरण में उदय होते हैं, उनके नतीजे को प्रभु इच्छया में समर्पण करके हर वक्त अपने आप को ईश्वर परायण बनाना और सत्-पुरुषार्थ धारण करके हर एक जीव को सुख देना अपना धर्म जाने।”

“ऐसी भावना जिस पुरुष को प्राप्त हुई है यानी जो अपने तन, मन धन की आसक्ति को त्याग करके अपने आपको हर घड़ी, हर लम्हा प्रभु परायण बनाता है, वह ही परम ज्ञानी आत्म आनन्द अर्थात् अविनाशी सुख को पाता है जिस सुख की वास्तव में चाहना हर एक जीव को हर वक्त लगी रहती है।”

## धर्म क्या है?

“धर्म वह धारणा है जिससे मन को शान्ति मिले। पाप क्या है? पाप वह कर्म है जिससे मन जले। जीव को अख्तियार है ख्वाहे ठण्डक हासिल करे ख्वाहे जलन। धर्म ठण्डा करेगा नेकनामी होगी। पाप जलावेगा और बदनामी होगी। महापुरुषों ने तजुर्बा किया और बतलाया कि धर्म से कल्याण होता है और पाप का असर बुरा होता है।”

## जीवन का उच्च लक्ष्य

बुद्धि यानी रूह खुदी के ज़ेर असर (वशीभूत) होकर महसूसत (भावनाओं) ख़्वाहशात (इच्छाओं) और लज़्जात (जीभा के और दूसरे स्वादों) की कैद में आकर अच्छे या बुरे फेल (कर्म) करती है जिसका नतीजा खुशी या ग़मी देखती है। यह ही तमाशगाहे आलम (सांसारिक रंगमंच) है। जब तक खुदी से बालातर (ऊपर) होकर ज़ाते अब्दी (अविनाशी पुरुष) की पहचान नहीं कर लेती, तब तक रूह को क्याम नसीब (निश्चलता प्राप्त) नहीं होता..... वजूद की नापायदारी (शरीर की नशवरता) समझने से लज़्जातों से अबरी हासिल होती है। तमाम वजूदों के फेलों का नतीजा मालिके कुल (ईश्वर) की रज़ा में देखना और

मालिक के नाम की विरद करनी (सिमरण करना) खाहशात से अबूरी हासिल करने का इलाज है और बिल्कुल फनाह फिल्ला की हालत को हासिल करके मालिके कुल की ज़ात को ग़ैर तसव्वर (निर्विकल्प) हो करके मुशाहदा अपने बातन (अन्दर) में करना महसूसीत से आज़ादी हासिल करना है। इसी हालत की राहते-अब्दी (शाश्वत शान्ति), निज़ात, वसाले हक (सम पद अवस्था) और निर्वाण शान्ति कहर कर आरफों (ज्ञानियों) ने बयान किया है। यह हालत ही असली करार है और रंज़ोगम से बालातर है। इस जावेद (अविनाशी) ज़िन्दगी की तहकीकात ही इन्सानी ज़िन्दगी का आला मक़सद (जीवन का परम लक्ष्य) है। अच्छी तरह से विचार कर लेवें।”

## मादे और रूहानियत की तहकीकात ( भौतिकवाद और अध्यात्मवाद की खोज )

“मादे यानी तत्वों की तहकीकात अगर गहरी से गहरी भी की जाए, असली तसल्ली नहीं आती, तब तक कि रूहानी ज़िन्दगी यानी जीवन शक्ति की तहकीकात न ही जावे, जो असली स्वरूप समता का है।”

“किसी कौम और मुल्क की दायमी (रहने वाली) तरक्की महज़ मानसिक खाहिशात यानी ज़रूरयाते ज़िन्दगी को बढ़ाने से कायम नहीं रहती, जब तक त्याग स्वरूप रूहानी जिन्दगी की साथ-साथ तहकीकात न की जावे। ज़रूरयाते ज़िन्दगी की ज़्यादती अक्सर तबाही कर देती है। यह दृढ़ निश्चय होना चाहिए।”

## नुमायशी जीवन

“इस ज़माने में जिसे रोशनी का ज़माना कहा जाता है, इसमें बेशक मादी (भौतिक) जागृति आ गई है। वे लोग यह जान गए हैं कि रहन-सहन किस तरह से अच्छा हो सकता है। वे ऐसा जान गये हैं कि खाओ, पियो और मौज करो। मगर इसके नतीजे से गाफिल (अनभिज्ञ)

हैं, वे नहीं जानते कि नुमायशी (दिखावे वाले) जीवन से सिवाए अशान्ति बेचैनी के कुछ प्राप्त नहीं हो सकता।”

## एक ईश्वर भूलने से

“एक ईश्वर को भूल कर जीवन अनेक तरह की चिन्ता, फिक्र में गिरफ्तार हो जाता है। ईश्वर पर जब यकीन विश्वास ही नहीं, मन कैसे ठहरे? मन को चंचल करने के लाखों सामान नित्य से नित्य बन रहे हैं। मगर संसार की कोई वस्तु भी इसे तसल्ली नहीं दे सकती। अपनी ज़रूरत को कम करो, सादगी धारण करो। जब मर्यादा धारण करोगे, खाने पीने और लिबास को सादा करोगे, चेष्टा कम होगी। सत् सिमरण करने से मन शान्त होगा। संसार की चमक-दमक को देख कर जो मोहित हो रहे हैं, वे मूर्ख जीव हैं। जीव को चाहिए कि अपने अन्दर जो झगड़ा लगा हुआ है, उसको निपटाये, अपने अन्तःकरण को शुद्ध करे। इस देह के अन्दर जो जीवन शक्ति आत्मा है उसको जानने का यत्न करे।”

## कर्म कैसे खत्म होता है?

“मन दिन रात किसी वक्त भी नचिल्ला नहीं रहता। कुछ न कुछ करता ही रहता है, जब तक इसका नाचना कूदना बन्द नहीं होता, इसकी गति नहीं होती। वह नाचना कूदना तब बन्द होता है जब यह आत्म रूपी समुन्दर में मिलेगा। जैसे दरिया बह रहा है, उसके आगे बन्ध बांध दिया जावे, वह उसे तोड़ देगा। उसके आगे पहाड़ खड़े कर दिये जायें, वह उन्हें भी तोड़ कर निकल जावेगा। लेकिन जब समुन्दर से मिल जावेगा, शान्त हो जावेगा। जीव की कामना कल्पना खत्म नहीं होती, जब तक परमेश्वर को प्राप्त न होगा। इसका ज़ोर-शोर खत्म नहीं होगा। जब परमेश्वर पूर्ण रूप इसको मिल जावेगा, तब इसको शान्ति होगी।”



## कर्तव्य परायणता

‘सही फरायज (कर्तव्यों) को सरइन्जाम देना (पूरा करना) ही कामयाब जिन्दगी है। अपने फरायज में जो हर वक्त स्वतन्त्र है, वही शूरवीर है। जो स्वार्थ की बढ़ती हुई अग्नि को परमार्थ के जल से सींचत करता है, वही परम गति को प्राप्त होता है। इस संसार में सब जीव यत्न-प्रयत्न करते हुए अपना-अपना सफर खत्म करते हैं। मगर जिनका यत्न परमार्थ अनुकूल है, उनका जीवन दुर्लभ है। जहां तक कोशिश हो अपने को सत् के आधारी बनाना चाहिए। इसी में परम कल्याण है।

### बच्चों के बारे में

“.....जैसे बड़े बुजुर्ग चलेंगे, उनको देख कर ही छोटे चलेंगे। खास कर माताओं के हाथ में बच्चों का जीवन होता है। जिस तरह वे चलेंगी, वैसे ही उनके बच्चों का जीवन बनेगा। सफाई केवल शरीर और कपड़ों की ही नहीं होनी चाहिए, बल्कि मानसिक पवित्रता के लिए अच्छी आदतें उन्हें डालनी चाहिए। किस्से कहानियां पढ़ने के बजाए आला (श्रेष्ठ) इतिहास पढ़ने चाहिए। बच्चों को गिरावट की तरफ ले जाने वाला सबक कभी नहीं देना चाहिए। साथ-साथ प्रकाशक शक्ति को भी जानने का सबक देते रहना चाहिए।”

### दूई ( द्वैत ) का त्याग

“खुदा के हुक्म से जब से इस दुनिया का निज़ाम शुरू हुआ है, रूहें यानी जीव खाकी जिस्म को धार कर आ और जा रही हैं। जब तब जिस्म है, तब तक हमारी अपनी-अपनी दुनिया कायम है। हर एक रूह इस खाकी वजूद में हैरान व परेशान है। इस हैरानी और परेशानी का इलाज करने वाले मशरक व मगरब (पूरब व पश्चिम) में होते चले आये हैं और आगे भी आते रहेंगे। उनके नक्शे कदम (पद चिन्हों) पर चल कर ही हज़ारों रूहों ने निज़ात अब्दी, लाफानी (अविनाशी) खुशी, दिल

की तसकीन हासिल की..... खास हुकमे खुदाई (ईश्वरीय आदेश) सुनाने वाली (रूहें) जब-जब भी दुनिया में आई, उनको बड़ी-बड़ी तकलीफात का सामना करना पड़ा। लेकिन उनके सिदक़े कामिल (दृढ़ विश्वास) ने सब को गरवीदा बना लिया। (मोहित कर लिया) किसी भी मुतबर्क किताब (पवित्र ग्रन्थ) में ऐसा नहीं लिखा कि अपने नफस के वास्ते रूहों को बेजा तकलीफ दी जावे। इनमें सही खिदमत (सेवा) का ही एलान किया हुआ है। परमेश्वर, रब्ब या खुदा सिर्फ हिन्दुओं या मुसलमानों का वाहद (अकेला) खरीदा हुआ नहीं। हिन्दू इसके मालिक नहीं या और किसी की भी मलकियत नहीं। उस ज़ाते-आला (परम सत्ता) से ही सब रोशन हो रहे हैं। उस ज़ाते आला से जो मुनकर हुआ है, वह ही काफिर है। मालिक के नूर को वही मोमन या तालिब (जिज्ञासु) समझा सकता है जिसकी निगाह से दूई यानी गैरियत नहीं है। जो सब चरिन्द, परिन्द, इन्सान हैवान में मालिक की ज़ात को देखता है, वह अपने पीर पैग़म्बरों को मानने वाला है। हर एक के साथ मुहब्बत प्रेम से बर्ताव करने वाला है, जिस हाल में खुदा रखे, उसमें रहने वाला है, यानी 'राज़ी बर रज़ा' होकर धन-दौलत, दिल और जिस्म सब खुदा की चीज़ जानने वाला है, सब कुछ उसका है तो फिर उस पर गरूर (अभिमान) करना कि चीज़ें मेरी हैं, वे ही मूर्ख यानी काफ़र है। अक्ल की आंख से देखना चाहिए। इस दुनिया में मेरी ऐसी कौन सी चीज़ है जो खुदा के नाम पर उसे दे सकते हैं। नफ़स की खातिर मेहर को छोड़ कर कैहर को अपनाना..... कहां की अक्लमन्दी है। यह मेरी हिर्स का सारा तमाशा है, जिसका नतीजा खुशी और ग़मी है। तकबीर पढ़नी है तो हिर्स और खुदी की पढ़। जिस करके खुदा (साहेब) राज़ी हो। दुनिया का सही लाभ यानी नफ़ा मिले। जो नित्य ही रज़ाये अल्ला (ईश्वर की मर्जी) में मुस्तग़र्क़ (लीन) रहने वाले हैं, उसकी ग़फलत खत्म हो जाया करती

है। जो खुदी की हालत में रहने वाले हैं, वे कभी भी दिल की राहत को न पा सकेंगे। खुदा आप सब को ईमान, सब्र और आजज़ी (विनम्रता) बख़्शो।”

## क्षणिक सुख और शाश्वत दुःख

“इस भयानक समय जिसमें तकरीबन (लगभग) सारे ब्रह्माण्ड में आशान्ति ही अशान्ति छाई हुई है और नित्य ही विशाल रूप में एक दूसरे के विनाश-उपद्रव प्रगट हो रहे हैं, इसका कारण महज़ वासना का फैलाव है और वासना ही अधिकता केवल भोगमयी जीवन से प्रगट होती है और भोगमयी जीवन सत् विवेक के हीन होने से जकड़ता है....”

“इस संसार की जीवन यात्रा में तो सब प्राणि मात्र अपनी जीवन क्रिया को अधिक विस्तारपूर्वक फैला कर आरज़ी (क्षणिक) खुशी और दायमी (शाश्वत) रंज को प्राप्त करके अपने-आप में हर वक्त दुःखी रहते हैं..... संसार की गर्दिश को सही विचार करके हर वक्त, अपने-आप को निर्मल शान्ति के मार्ग पर दृढ़ करना चाहिए।”

## उपदेशों से चुने कुछ अनमोल मोती

- “ईश्वर सत् है। उसका आसरा परम सुख देने वाला है।”
- “ईश्वर विश्वासी नित्य तृप्त रहता है।”
- “खुदा क्या है? तेरे वजूद के अन्दर लावजूद शै (वस्तु)। तेरे इस मकान के अन्दर लामकान ताकत।”
- “ईश्वर कहीं दूर नहीं। हर जगह मौजूद है। शाहरग से नज़दीक है।”
- “ज़िन्दगी में ज़िन्दगी की पहचान करो।”
- “जिसने अपने अन्दर खोज शुरू कर रखी है, वह एक दिन ज़रूर मंजिले मकसूद (निश्चित लक्ष्य) को पायेगा। चलने वाले के वास्ते कोई साहिल (तट) दूर नहीं रहता।”

- “जुस्तजू जारी रखो। जो चलता है, पहुंच जाता है। जो खोजता है, पा लेता है।”
- “मालिक के दरबार में चालाकी चतुराई नहीं चलती।”
- “सादा सुभाव बनाओ। छल कपट से रहित रहो।”
- “जब कुदरत (प्रकृति) में तफरीक (भेद-भाव) नहीं तो तू तफरीक क्यों करता है? तंगदिली (संकुचित विचारधारा) तुझे किसी मेराज़ (शिखर) पर नहीं पहुंचने देगी।”
- “सत्पुरुषों की वाणियां चित्त के कपाट खोलने वाली होती हैं।”
- “किसी मज़हब (धर्म) के बुजुर्ग की तौहीन (अपमान) नहीं करनी चाहिए।”
- “अल्लाह के बन्दों का मोज़ा (करामात) इबादत, बन्दगी में है। फकीर जान-बूझ कर करामात नहीं दिखाते।”
- “जब तक इन्सान पहले सच्चा इन्सान नहीं बनता, ईश्वर का मिलना मुश्किल ही नहीं, बल्कि नामुमकिन (असंभव) है। महज़ धार्मिक किताबें पढ़ते रहना जिन्दगी का मकसद नहीं है।”
- “खाली ज्ञान चर्चा के काम नहीं बनता, करनी करो।”
- “लिखो पढ़ो थोड़ा, गुढ़ो ज़्यादा।”
- “यह जीव आसरे दूंदता रहता है। चाहता है कि इसकी जगह मौलवी, पंडित, भाई पाठ कर दें। झूठ कपट जो यह दिन-रात करता रहता है, उससे इसे कोई छुड़ा नहीं सकता है।”
- “जीव अपने संस्कारों में कमी बेशी कर सकता है। अपनी कुव्वते इरादी (दृढ़ निश्चय) की मज़बूत करके।”
- “जीव की असली रास (पूंजी) नेक एमाली (शुभ कर्म) है।”
- “आलम बाअमल (विद्वान कर्तव्य परायण) हो, तब ही रंग लग सकता है।”
- “पाखण्ड से बचो।”

- “आहार-व्यवहार की पवित्रता पर खास ध्यान देकर चलोगे, तो कभी दुःख नहीं देखोगे।”
- “जिस्म की सफाई से ज्यादा दिल (मन) की सफाई करो।”
- “निर्भयता ही असली जीवन है।”
- “दूसरों के मलीन कर्मों को विचार करने से यह मन आज़ादी पकड़ लेता है, और आप भी उन कर्मों को करने लग जाता है।”
- “सारी धरती पर से कांटे कोई दूर नहीं कर सकता। अपने पांवों में जूता डाल लेने से कांटें होते हुए भी नहीं चुभते।”
- “सिमरन करने वाले से सेवा और सेवा करने वाले से सिमरन बन सकता है।” दोनों लाज़म मलजूम (अन्योन्य आश्रित) हैं।”
- “सेवा करवाने की कभी चित्त में ख्वाहिश न रखो। हमेशा सेवा करने का चाव हमारा बना रहे।”
- “अपनी तरफ से हर जीव मात्र में प्रेम रखो। तन मन से जितनी सेवा बन सके करो, दो घड़ी मालिक की याद में समय दिया करो।”
- “दर-असल (वास्तव में) मन का सोचना भी कर्म है। बयान करना भी कर्म है। स्थूल रूप में करना भी कर्म है। जीव एक पलक के लिए भी कर्म से खाली नहीं रह सकते।”
- “जीव की अशांति का कारण एक वासना ही है।”
- “मन का भटकाना ही संसार है।”
- “संसार देखो, लेकिन चित्त मत किसी चीज को दो।”
- “संसार रूपी बाग़ को देखते हैं, मगर बनाने वाले का विचार कोई विरला ही करता है।”
- “सांसारिक धन, परिवार, महल अटारियां वगैरह हमेशा रहने वाला सुख नहीं दे सकते। इसलिए जो जीव इनको प्राप्त करने पर इनको

प्रभु की दात समझता है, उसके लोभ और मोह आप ही कम हो जाते हैं।”

- “रुब्ब जंगलों में नहीं मिलता। रब तो कर्तव्य पूरे करने से मिलता है।”
- “ऐसी दृढ़ता धारण करो कि आत्मा परमात्मा को इस जन्म में जानकर ही छोड़ूंगा।”
- “ऐसा मन में पक्का इरादा बनाओ कि प्रभो! इस जीवन में तेरे स्वरूप में मिलना है।”
- “पूरी अक्ल से, पूरी ताकत से, पूरे इल्म से और पूरी कोशिश से अपने जीवन को अति निर्मल करने का यत्न धारण करना और शरीर के अन्त समय के होने से पहले ही निर्भय अवस्था आत्म आनन्द को प्राप्त कर लेना ही मानुष जन्म की परम सफलता है।”
- “जिस प्रेम से संसार की तरफ दौड़ते हो, उससे दुगने प्रेम से दो घड़ी मालिक के चरणों में मन चित्त दे दो तो काम बन जाये।”
- “हे ईश्वर! मेरे में ताकत दे जिससे तेरे एहकाम (आदेशों) को पूरा कर सकूँ।”
- “शरीर के सुखों को मर्यादा के अन्दर रखो।”
- “तमाम फ़जूल हरकात से परहेज करें।”
- “जिस तरह अपने सुखों को चाहना करता है, उसी तरह दूसरों को सुख पहुँचाने वाला हो।”
- “शरीर के सुख नामुकम्मल (अपूर्ण) हैं।”
- “अपना स्वभाव ही सुख रूप है।”
- “यह शरीर एक महान कर्तव्य के लिए मिला है। भोग भोगने के लिए नहीं।”
- “जो मर्यादा का आहार-व्यवहार करता है, वही आराम में रहता है।”

- “इस संसार का सही चरित्र समझो। यह ही जीवन का मुद्दा और मकसद (लक्ष्य) है।”
- “जीवन का सत् आदर्श प्राप्त करना ही परम उच्चता है।”
- “जिसने पूर्ण परमेश्वर को समझ लिया, वह खुद भी पूर्ण हो गया।”
- “याद रखो जब तक ज़ाती (निजी) जीवन सदाचारी नहीं, समाज का भला नहीं होगा।”
- “देश की कल्याण चाहने वाले पहले अपना ज़ाती जीवन उत्थान करें।”
- “आखिर जीत सच्चाई की है।”
- “जीवन को कर्तव्यमयी बनाओ।”

## ( ग ) प्रश्नोत्तर के रूप में

नोट- नीचे दिये गए प्रश्न-उत्तर ग्रन्थ “श्री समता विलास” के पहले अध्याय “परम निधान” के लिए गए हैं।

- दुनिया में ज़बरदस्त कोशिश क्या है? धर्म के मार्ग पर चलना।
- दुनिया में सच्चा मित्र कौन है? अपनी नेक एमाली (अपने शुभ कर्म)।
- दुनिया में हमेशा खुश कौन रहता है? जो दूसरों का भला चाहता है।
- सच्ची प्रस्तिश (पूजा) किसे कहते हैं? जिसमें अपनी गर्ज (स्वार्थ) न हो।
- वह कौन है जिसका कोई दुश्मन नहीं? जो हर वक्त दूसरे की भलाई चाहता है।
- नेकी किसको कहते हैं? दूसरे का दुःख निवारण करना।
- मानुष जिन्दगी की सार क्या है? सत् स्वरूप की तलाश।
- मौत से बड़ा अज़ाब (दुःख) क्या है? अपनी ग़फ़लत का न विचार करना।
- जिन्दगी में मुर्दा कौन है? जो खुदगर्ज़ है।
- ईश्वर की शक्ति क्या है? जो कुल कायनात (ब्रह्माण्ड) को आनन्द दे रही है।
- धर्म क्या चीज़ है? जिससे सच्ची खुशी मिले।
- ज्ञान क्या चीज़ है? जो हमेशा की जिन्दगी देवे यानी रोशनी देवे।
- सबसे बड़ा पाप क्या है? दूसरे को दुःख देना।
- अहंकार क्या चीज़ है? कर्म का कर्ता बनना।
- ख़्वाहिश कैसे पैदा होती है? कमी के महसूस करने से।
- ख़्वाहिश से कैसे छूट सकते हैं? पूर्ण पुरुष परमेश्वर की प्राप्ति से।
- रोगी कौन है? जो बेहूदा खाना खाए।



## जिज्ञासुओं के कुछ प्रश्नों के उत्तर

**प्र०** महाराज जी, बुद्धि का क्या काम है?

**उ०** प्रेमी! बुद्धि का काम है सोचना, निर्णय करना और खोज करना।

**प्र०** महाराज जी, बुद्धि की खुराक क्या है?

**उ०** प्रेमी! बुद्धि विचार की खुराक खाती है। जिस तरह के विचार इसको खाने के लिए मिलेंगे, वैसा ही असली मानों (अर्थ) में बुद्धि का स्वरूप बन जायेगा। इस वास्ते सत्पुरुष हमेशा विचार की पवित्रता पर जोर देते हैं।

**प्र०** महाराज जी! इबादत ( भक्ति ) करने के लिए क्या-क्या जानना ज़रूरी है?

**उ०** प्रेमी जी! गौर (विचार) और यकसूई (एकाग्रता) के बगैर इबादत होनी मुश्किल है। सबसे पहले बुद्धि को एकाग्र करके जिसकी इबादत करते हैं, उसके वास्ते चित्त में तड़प होनी चाहिए। फिर गौर प्राप्त होगी। तब इबादत करने लायक बनोगे।

**प्र०** महाराज जी! ईश्वर क्या है?

**उ०** प्रेमी! कुल कायनात (ब्रह्माण्ड) में जो जीवन शक्ति चेतन सत्ता है, जिस करके हर शै (वस्तु), हर वजूद (शरीर) ज़िन्दा है, उसे ईश्वर कहते हैं।

**प्र०** स्वामी जी! क्या खुदा है? या यों ही ढकोसलाबाजी है? अगर है तो कहां है?

**उ०** प्रेमी जी! खुदा जरूर है। अल्लाह, राम, ईश्वर जरूर हैं। कहीं भूल कर भी ऐसा ख्याल न करना कि वह नहीं है। ज़रा गौर से सुन। तेरे वजूद के अन्दर लावजूद क्या शै है। तेरे इस मकान के अन्दर लामकान कौन ताकत है।

**प्र०** महाराज जी! ईश्वर-ईश्वर का नाम आप बार-बार लेते हैं और उसके बारे में आपके बयान और ही तरह के नज़र आते

हैं। मेहरबानी करके ईश्वर वाला मसला ही साफ करें।

उ० प्रेमी! तुम्हें बहुत थोड़े से मैं इसको साफ कर देते हैं। तसल्ली व नातसल्ली हालत में अबूर पाकर अपने आप के निज स्वरूप में स्थित होना ही स्थिर है।

प्र० महाराज जी! ईश्वर विश्वास की कसौटी क्या है?

उ० प्रेमी! बड़ा गम्भीर इम्तहान (परीक्षा) है। ईश्वर विश्वास में पक्का इन्सान लाभ और हानि में एक बराबर रहता है। उसकी मर्जी में राजी बा-रजा रहने की आदत मुकम्मल और पक्की हो जाती है। ख्वाहे वह राज पर बैठे, वहां भी हर्षित नहीं होगा और ग़हरी से ग़हरी मुसीबतों को प्राप्त हो जावे तो वहां उसे दुःख नहीं होगा।

प्र० महाराज ! गृहस्थ अच्छा है या फ़कीरी?

उ० प्रेमी! दोनों रोना ही हैं। इबादते-इलाही (ईश्वर भक्ति) में ही आनन्द है।

प्र० महाराज जी! फायलियत और अनानियत किसे कहते हैं?

उ० प्रेमी! फायलियत, कर्तापन (मैं करने वाला) और अनानियत अहंकार (मैं और मेरा)।

प्र० महाराज जी! फ़कीर के दरबार में आकर क्या भेंट देनी चाहिए?

उ० प्रेमी! सच्चे फ़कीर दुनियावी चीजों को अहमियत नहीं देते। उनके ताल्लुकात (सम्बन्ध) रूहानी हुआ करते हैं। वे सब जीवों को आत्मस्वरूप करके ही समझते हैं। तुम्हारे अन्दर कोई बुराई या अवगुण है, कोई तपश तुम्हें तपा रही है, कोई कल्पना सता रही है तो उसको फ़कीर के दरबार में भेंट कर दो। यह ही भेंट फ़कीर तुम लोगों से चाहते हैं।

**प्र० महाराज जी! फ़कीर का प्रशाद क्या है?**

उ० प्रेमी! प्रशाद के बारे में भी यही बात है। जो कुछ भी ठण्डक, तसल्ली और नेक गुण अपनी जिन्दगी मुनव्वर (रोशन) बनाने के लिए सन्तों के संग से मिलें, उनको फ़कीर का प्रशाद जान कर ग्रहण करो।

**प्र० महाराज जी! संसार क्या है?**

उ० संसार शकूक (भ्रमों या शंकाओं) का समुन्द्र है।

**प्र० महाराज जी! जिन्दगी कैसे चलानी चाहिए?**

उ० प्रेमी जी! फ़र्ज वाली जिन्दगी बनाओ। ग़र्ज वाली जिन्दगी न चलाओ।

**प्र० महाराज जी! असली आनन्द किसे कहते हैं?**

उ० लाल जी! इसके लिए एक ही बात काफ़ी है। एक तो शरीर और शरीर के मुतल्लक किसी भी चीज़ का चाहना अपने अन्दर न रखे यानी अपनी तमाम ख़्वाहशात (इच्छाओं) से जब तू अबूर पा जावेगा, तेरे अपने आप को ही शक्ति मिल जावेगी और आनन्द से सही स्वरूप का तुझे पता चल जावेगा। यह बात ब्यान से बाहर की है।

**प्र० आशिक़ तो मस्त रहता है, जैसे मनसूर वगैरह और आप फ़रमाते हैं। कि उदास रहता है। यह कैसे?**

उ० आत्म आनन्द करके तो वह मस्त रहता है। मगर शरीर से तथा दुनिया से उदास रहता है। बाक़ी पहचान करनी बड़ी मुश्किल है।

**प्र० ईश्वर को पाने का रास्ता एक है या अनेक?**

उ० सिद्धों का रास्ता एक है। मगर वकीलों के अनेक। सिद्ध जो हैं वे अपनी अनुभवी बात बतलाते हैं। मगर वकील दूसरों की वाणी सुनाकर वकालत करते हैं।

**प्र० मनुष्य जीवन का मक़सद ( उद्देश्य ) क्या है और क्यों है?**

उ० मनुष्य जीवन का मक़सद है निर्भय शान्ति यानी ऐसी खुशी जिसमें तबदीली कर डर न हो। यह तब ही हासिल हो सकती है जब जिस्म की तहकीकात करके उसके अन्दर जो जीवन शक्ति है, उसे मालूम किया जावे। उसके मालूम हो जाने पर क्यों का जवाब खुद-बखुद मिल जायेगा यानी पता लग जावेगा कि वह कहां से आया है और कहां जाना है।

**प्र० महाराज जी! शब्द की वजाहत ( व्याख्या ) फ़रमायें?**

उ० प्रेमी! शब्द ही जीवन शक्ति है। इसी को आत्मा, ब्रह्म नाद वगैरहा नाम करके ब्यान किया गया है। शब्द आत्मा का स्वरूप है। वह अगोचर है।

**प्र० कौन से कर्म बन्धन का मूजब ( कारण ) होते हैं और कौन से मुक्ति के?**

उ० गर्ज करके जो काम किया जाता है, वह बन्धन देता है और फ़र्ज करके किया हुआ काम आजादी देता है।

**प्र० अगर हर एक मुक्ति में लग जावे तो दुनिया का कारोबार कैसे चलें?**

उ० मुक्ति की चाहना न हर एक कर सकता है और न हर किसी को ज़रूरत है। किसी महापुरुष को ही मुक्ति की चाहना होती है और कोई कोशिश सही करता है और कोई ही हासिल करता है। बाकी तमाम नुमायश है। जब तक ख़्वाहशाते नफ़सानी (विषय वासना) का गुलाम है, तब तक मुक्ति बहुत दूर है। हालते-बेख़्वाहशी (निर्वास अवस्था) को मुक्ति कहते हैं, जो कोई ही हासिल कर सकता है।

- प्र०** महाराज जी! लाखों ही साधु सन्त और मठ हैं और सभी मुक्ति के दावेदार हैं। लेकिन सच्चे साधु की पहचान क्या है?
- उ०** प्रेमी! खुराक, लिबास और रहन-सहन से पाखण्डी (बनावटी) और सन्त की पहचान हो जाती है। आजकल सच्चाई के नाम पर पाखण्डवाद (दिखावा) बहुत फैला हुआ है। और दुनिया अंधी होकर इन फरेबियों के जाल में फंसी हुई है।
- प्र०** महाराज जी, हमको आहार किस कद्र करना चाहिए, कोई उसके विषय में सहल तरीका बताये ताकि अभ्यास में तरक्की हो?
- उ०** प्रेमी, तुम खुद आहार-व्यवहार का प्रोग्राम बना सकते हो। जितना कम करना चाहो कर सकते हो। जितना इसे बढ़ाना चाहो, बढ़ा सकते हो। अगर अभ्यास करना है तो सूक्ष्म और युक्ति का आहार-व्यवहार करना पड़ेगा। भोजन इतना करो जिससे भूख की निवृत्ति हो जाए। थोड़ी भूख रखकर खाओ। ऐसा करने से प्राण सही चलते हैं। शारिरिक रोग भी कम होते हैं।.....
- प्र०** मौत का वक्त, तरीका और जगह मुकर्रर (निश्चित) है। क्या जगह-ब-जगह भाग जाने से इसमें कोई तबदीली हो सकती है?
- उ०** मौत का वक्त, तरीका और जगह कोई मुकर्रर नहीं है। कर्म के मुताबिक (अनुसार) है। जब पाप का जोर उदय होता है, तब ज़रूरी हानि हो जाती है। बाहर की रक्षा काम नहीं करती। कर्मों के नतीजे से ही पता चल सकता है।
- प्र०** दुःख का कारण क्या है?
- उ०** शरीर और शरीर से सम्बन्धित पदार्थों में ममता ही दुःख का मूल कारण है।

**प्र०** महाराज जी, मूर्ति पूजा से क्या सबक ( शिक्षा ) मिलती है?

**उ०** ईश्वर की याद में जिस समय बैठो, मूर्ति की तरह बेसुध हो जाओ।

**प्र०** महाराज जी, सदाचारी जीवन क्या है?

**उ०** प्रेमी जी! सादा खाओ, सादा पहनो, मांस शराब का त्याग करो, छल कपट को छोड़ दो। ताश, जुआ और सिनेमा से दूर रहो। ख्यालात पवित्र बनाओ और कर्म शुद्ध करो। दूसरों की सेवा करो। हो सके तो दो घड़ी भगवान का सिमरण करो। यही सदाचारी जीवन है।

**प्र०** महाराज जी! सत्गुरु धारण करने से और उनके उपदेशों को सुनने से क्या मनुष्य का कल्याण हो जाता है?

**उ०** नहीं प्रेमी, गुरु का काम सही रास्ता बतलाना है। आगे फिर उस रास्ते पर चलना पड़ेगा। तब सिद्धता और कल्याण होगी।

**प्र०** महाराज जी! पुण्य कर्म, पाप कर्म और सत् कर्म की क्या पहचान है?

**उ०** प्रेमी जी! जिन कर्मों के करने से अपने अन्दर ठण्डक प्रतीत हो, बशाशत (हर्ष) आवे, खुशी हो, दिल में उदारता और उत्साह बढ़े और अचिन्ता हो, वे सब पुण्य कर्म ही जानो। जिन कर्मों करके भय, लोभ और खेद की प्राप्ति हो, वे पाप कर्म ही समझो। सिर्फ आत्मा ही सत् है। इसलिए जो कर्म उसको जानने के लिए किए जाते हैं, जिनमें और किसी किस्म का बन्धन नहीं होता, वे महापुरुषों ने सत्कर्म के नाम से पुकारे हैं।

**प्र०** महाराज जी, निष्काम कर्म किसे कहते हैं?

**उ०** प्रेमी, गर्ज (स्वार्थ) करके जो काम किया जाता है, वह बन्धन देता है और फर्ज समझ कर किया हुआ काम निष्काम कहलाता है और आज्ञादी देता है।

**प्र०** महाराज जी! जनता का सुधार कैसे हो सकता है?

**उ०** प्रेमी जी! पहले अपना सुधार करो। जनता का सुधार अपने-आप

हो जावेगा। तुम्हारा आला इखलाक़ (ऊंचा चरित्र) दूसरों पर खुद-बखुद असर डालेगा।

प्र० महाराज जी! मन बड़ा बिकराल है। इससे किस तरह छुटकारा पाया जा सकता है?

उ० प्रेमी! मन ही इसका मित्र और मन ही शत्रु है। चाहे इसे विषयों की तरफ लगा दो, चाहे करतार की तरफ। यह एक समय में एक ही काम करेगा। दोनों हालतों में मन, इन्द्रियां, बुद्धि ये ही रहती हैं। सिर्फ इनका स्वभाव बदल जाता है। स्वभाव बदलने के वास्ते वैराग्य और अभ्यास है। और कोई भी तरीका ऐसा नहीं जिसके द्वारा ठिकाने पर पहुंच सके। इस तरह विचार करते रहा करो, किसी ठिकाने पर पहुंचना है तो।

प्र० महाराज जी! आप अभी कह रहे थे कि सिदक़ और शौक से यह संसार सागर पार किया जा सकता है। सो बताएं कि सिदक़ और शौक किसे कहते हैं?

उ० हां प्रेमी! ज़रूर समझो। शौक तो ऐसा हो कि आत्म ज्ञान रूपी मैदान अब मारा कि मारा। अब देर नहीं है कि मैं उस अवस्था पर पहुंचूँ। इस तरह विश्वास भरा शौक हो। तथा सिदक़ हो कि मैं ज़रूर कामयाब हूंगा। कोई ताकत नहीं कि मेरी कामयाबी रोक सके। भेद थोड़ा ही है। दोनों करीब करीब एक ही बातें हैं।

प्र० महाराज जी! हमारी भाषा भी अलग होनी चाहिए जिस तरह गुरुमुखी में ग्रन्थ साहेब है। भगवान बुद्ध की वाणी विचार प्राकृत में है। कुरान शरीफ अर्बी में है। यह नई बाणी भी नये ढंग से होनी चाहिए और लिबास भी एक तरह से प्रेमियों का होना चाहिए?

उ० प्रेमी! और स्यापा डाल! (और मुसीबत खड़ी कर दे).... अच्छे विचार चाहे हिन्दी, उर्दू, गुरुमुखी, अर्बी, फारसी, अंग्रेजी जिस ज़बान में लिखे होते हैं, वहां से सबक़ हासिल कर लेने की

कोशिश करो। हर्फों (शब्दों) को थोड़ा चाटना है। तुमने सत् भाव धारण करने हैं। हर्फ (अक्षर लिपि) कल्याण करने वाली नहीं। एक लकीर को ही टेढ़ा-मेढ़ा करने से सब हरुफ़ (शब्द) दुनिया के बने हैं। इनको जिधर मोड़ो, मुड़ जायेंगे... इन तंग दायरों को आइन्दा आने वाली (भावी) नसलें नहीं कबूल करेंगीं। नए हरुफ बनने में कुछ मिनट नहीं लगते। अभी बन सकते हैं। बाद में ये छोटी-छोटी बातें भयानक रूप धारण कर लेती हैं। फिर तुम्हारी समता फैल नहीं सकेगी। अलैहदगी (पृथकता) वाली बात सोचना भी गुनाह (पाप) है। समता के प्लेटफार्म पर हर एक धर्म प्रचारक को समता धर्म पर बोलने की आज़ादी हो। अच्छी तरह धर्म के रूप में पखवाद (पक्षपात) से रहित होकर विचार कर सकें। ज़ाहर लिबास ख्वाह किसी किस्म का हो मगर इन (समता के) असूलों से कोई भी किसी वक्त भी इन्कार करने वाला नहीं हो सकता। कोई कैद बाहर वेष की नहीं रखी। हर जगर हर वक्त समता साधन के धारण करने में शान्ति और सुख है। समता शास्त्र जो हैं, यह सब जीवों के वास्ते हैं। हर मत में लोग इसमें से अपनी बेहतरी के वास्ते विचार ले सकते हैं। क्योंकि सब पाबन्दियों से मुबर्रा (रहित) है। प्रेमी! अपने-आप को तंग दायरे में महदूद (सीमित) करने की कोशिश न करो।

**प्र० महाराज जी! आप हिन्दी-संस्कृत वगैरह तो पढ़े नहीं। बड़े ऊंचे-ऊंचे हिन्दी के शब्द उच्चारण करते हैं?**

**उ० प्रेमी! जब दिल की तख्ती साफ, निर्मल, शुद्ध हो जाती है, इल्म (विद्या) का भंडार सामने आ जाता है। अभी तो मुश्किल अलफ़ाज़ (शब्द) बोलने की आज़ा ही नहीं है। एक भाव को कई तरीकों से इस वास्ते समझाया जाता है कि परमार्थ का मार्ग छोटी बुद्धि वालों को समझ पड़ जाए।**



प्र० महाराज जी! “योग मार्ग” को अच्छी तरह समझाने के लिए कुछ विचार प्रगट फरमाएं, जिससे जिज्ञासु आसानी से उसे समझ सकें?

उ० प्रेमी! गुहिय भेद को पूरी तरह खोला नहीं जा सकता। सौदा बहुत सस्ता न करो। वाणी में कई तरीके से इस का ब्यान हो चुका है। समझने वाले आप ही ढूंढते रहेंगे।

नोट:- (महाराज जी अप्रैल, 1953 में केला घाट राजपुर में ठहरे थे। उन्होंने एक सुबह स्वयं कहा था- “इस जगह की यादगिरी (स्मृति) के वास्ते प्रसंग लिखा जावे?” इस ऊपर दिये गए उत्तर के बाद केला घाट में ही महाराज जी ने “योग मार्ग बोध” अपने कर कमलों से लिखा, जो अब ग्रन्थ श्री समता विलास का भाग है।)

## आरती

तू पार ब्रह्म परमेश्वर, तीन काल रछपाल।

नित पाऊं शरनागती, सत् चरण कंवल दयाल॥

तू नित पतित उद्धार है, पूरन प्रभ जगदीश।

मोह माया संकट हरो, दीजो ज्ञान सन्देश॥

नित ही तेरे चरण की, मन में रहे प्रीत।

तू दाता दातार है, पुरुखोत्तम सुखरीत॥

पवन पानी बैसन्तर, धरती और आकाश।

सब को सरजनहार तू, आद पुरख अबनाश॥

घट घट व्यापक तू परमेश्वर, सरब जीयां आधार।

अनमत कूकर को राख लें, किरपानिद्ध करतार॥

काल करम जाये दूषना, खल बुद्धि हरो अज्ञान।

सत् शरधा पाऊं चरण की, अखंड प्रेम चित ध्यान॥

दीनानाथ दयाल तू, पल पल होत सहाये।

कीरत साचे नाम की, मन तन आए समाये॥

अन्तर का सब खेद हरो, दीजो सत् विश्वास।

सरनागत हूं मन्दमती, घट अन्तर करो परकाश॥

अन्तरगत सिमरन करूं, निरन्तर धरूं ध्यान।

घट घट में दर्शन करूं, आद पुरख भगवान॥

तू साचा साहब सरब परकाशी, शबद रूप आखण्ड।

गुनी मुनी उस्तत करें, तन मन पायें आनन्द॥

होवें दयाल तूं सत् परमेश्वर, देवें धीर अपार।

निमख निमख सिमरन करूं, चित्त चरन रहे आधार।।

काया अन्तर परतख होवे, नाद रूप विस्माद।

पलपल कीजूं आरती, तन मन तजू व्याध।।

जग आवन सुफला होवे, तेरी आज्ञा मन में ध्याऊं।

अन्तरगत करूं आरती, भव दुस्तर तर जाऊं।।

अन्धमत मूढ़ा नित प्रती, तेरे चरणी करें पुकार।

‘मंगत’ मांगे दीनता, सत् धरम सुख सार।।

अन्धमत मूढ़ा नित प्रती, तेरे चरणी करें पुकार।

‘मंगत’ मांगे दीनता, सत् धरम सुख सार।।

## समता मंगल

समता धरम हिरदे रसे, बिख ममता होवे नाश।

सत् सरूप परमात्मा, जल थल पाऊं परकाश।।

सब जीवों से प्रेम हो, तन मन सेवा धार।

समता साधन पाये के, नित परसां जय जयकार।।

सत् करम सत निश्चय, निर्मल पाऊं विचार।

“मंगत” समता धार के, जीत चलो संसार।।

सत् करम सत निश्चय, निर्मल पाऊं विचार।

“मंगत” समता धार के, जीत चलो संसार।।

भारतवर्ष में, अन्य स्थानों पर भी संगत समतावाद के आश्रम व सत्संग शालाएँ हैं जिनके बारे में जानकारी व अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी निम्नलिखित आश्रमों से ली जा सकती हैं।

HEAD OFFICE :  
**SANGAT SAMTAVAD**  
SAMTA YOG ASHRAM  
CHACHHRAULI ROAD  
JAGADHARI - 135003  
PH. NO. : 01732-244882

मुख्य ऑफिस:  
संगत समतावाद  
समता योग आश्रम  
छछरौली रोड  
जगाधारी-135003  
फोन नं0-01732-244882

DELHI OFFICE :  
**SAMTA YOG ASHRAM**  
ANSAL PALAM VIHAR  
FARM NO. 45  
VILLAGE SALAH PUR  
HUDA, GURGAON  
OPP. SECTOR-21  
NEW DELHI-110061  
PHONE NO. 28061518, 28061519

दिल्ली ऑफिस:  
समता योग आश्रम  
अंसल पालम विहार  
फार्म नं0-45  
गाँव सलाह पुर  
हुडा गुडगाँव, सेक्टर-21  
के सामने  
नई दिल्ली-110061  
फोन नं0-28061518, 28061519